**सदस्य बनें**

सच और सरोकार की पत्रकारिता से जुड़ें
वार्षिक सदस्यता : ₹ 500 मात्र

**पूरा वर्ष अख़बार नि:शुल्क**
**पैनल विज्ञापन दें**
अपने व्यवसाय/संस्था का प्रचार करें 'जन जन विचार' में।
**किफायती • प्रभावी • विश्वसनीय**
संपर्क : 69001 26012

जन जन की बात जन जन तक

साप्ताहिक

# जन जन विचार

**D.S. Associates**
Sri Om Plaza
2nd Floor, K.C. Road,
Chatribari, Guwahati-1
Phone : 7002682705

RNI Regd No. ASMUL/25/A2367 :: Guwahati, Friday, 20 February 2026 :: Vol-6 Year-1 :: शुक्रवार । 20 फरवरी 2026 । शक संवत 1947 । फाल्गुन । शुक्ल तृतीया । :: पृष्ठ-12 । मूल्य - 5 रुपए

## जन चिंतन

### लोकतंत्र का पर्व

असम एक बार फिर लोकतंत्र के महापर्व की दहलीज पर खड़ा है। विधानसभा चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन का अवसर नहीं, बल्कि राज्य की दिशा और दशा तय करने का निर्णायक क्षण भी है। इस बार का चुनाव कई मायनों में अलग है- राजनीतिक समीकरण बदले हैं, दलों के भीतर उथल-पुथल है और मुद्दों का स्वरूप भी व्यापक हो चुका है।

असम की राजनीति लंबे समय से पहचान, घुसपैठ, नागरिकता और सांस्कृतिक अस्मिता जैसे सवालों के इर्द-गिर्द घूमती रही है। साथ ही विकास, रोजगार, शिक्षा और बुनियादी ढांचे की चुनौतियां भी उतनी ही गंभीर हैं।

बाढ़ और कटाव, चाय बागान श्रमिकों की स्थिति, सीमावर्ती जिलों की सुरक्षा, युवाओं के रोजगार और औद्योगिक निवेश जैसे मुद्दे सीधे जनजीवन से जुड़े हैं। चुनावी विमर्श यदि इन सवालों पर केंद्रित होता है, तो लोकतंत्र मजबूत **शेष पृष्ठ 2 पर**

असम विधानसभा चुनाव की तैयारियों को अंतिम रूप देने के क्रम में गुवाहाटी में आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार अपने साथी चुनाव आयुक्त सुखबीर सिंह संधू और विवेक जोशी के साथ मीडिया को संबोधित करते हुए।

## जल्द घोषित होगी असम विस चुनाव की तिथि, दिल्ली में होगा फैसला

# रंगाली बिहू के रंग में नहीं पड़ेगा भंग

**जन जन विचार**
...✍ गुवाहाटी

असम विधानसभा चुनाव की तारीखों को लेकर तस्वीर लगभग साफ है, निर्णय दिल्ली में होगा और राज्य के 'जातीय उत्सव' बिहू को ध्यान में रखकर ही कार्यक्रम घोषित किया जाएगा।

भारतीय निर्वाचन आयोग (ईसीआई) की पूर्ण पीठ ने गुवाहाटी में प्रेस वार्ता कर संकेत दिया कि त्योहार और मतदान की तिथियों में टकराव नहीं होने दिया जाएगा। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने कहा कि दिल्ली लौटकर आयोग बैठक करेगा और चरणों सहित **शेष पृष्ठ 3 पर**

## रैलियों से रील्स तक : अब हर दिन चुनाव

**जन जन विचार**
...✍ गुवाहाटी

एक समय था जब चुनावी शोर मतदान के साथ थम जाता था। अब राजनीति में विराम नहीं है। रैलियां आज भी होती हैं, लेकिन असली लड़ाई मोबाइल स्क्रीन पर लड़ी जा रही है। भाषण मंच से शुरू होता है और रील, पोस्ट व लाइव स्ट्रीम के जरिए दिनों तक चलता रहता है।

उदालगुड़ी की सभा की तस्वीर साझा करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने यह स्पष्ट कर दिया कि अब हर जनसभा का डिजिटल विस्तार अनिवार्य है। मंच पर मौजूद हजारों की भीड़ से अधिक महत्व अब उन लाखों दर्शकों का है, जो स्क्रीन पर देख रहे हैं।

**आईटी सेल का बढ़ता प्रभाव :** भारतीय जनता पार्टी, कांग्रेस, असम गण परिषद समेत सभी **शेष पृष्ठ 5 पर**

# हर बूथ पर 50 फीसदी वोट का लक्ष्य

### डिब्रुगढ़ में भाजपा अध्यक्ष नितिन नबीन ने कार्यकर्ताओं को दिया चुनावी मंत्र

**जन जन विचार**
...✍ गुवाहाटी

असम विधानसभा चुनाव से पहले भाजपा ने संगठनात्मक स्तर पर बड़ा लक्ष्य तय किया है। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन ने कार्यकर्ताओं को निर्देश दिया है कि आगामी चुनाव में हर बूथ पर कम-से-कम 50 प्रतिशत वोट सुनिश्चित किए जाएं।

दो दिवसीय दौरे पर असम पहुंचे नबीन ने डिब्रुगढ़ में आयोजित 'पन्ना प्रमुख सम्मेलन' में कहा कि बूथ स्तर की मजबूती ही जीत की कुंजी है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से मतदाता सूची के प्रत्येक पन्ने तक पहुंच बनाने और संगठनात्मक नेटवर्क को और सशक्त करने का आह्वान किया।

नबीन ने विपक्षी दल कांग्रेस पर 'वोट बैंक की राजनीति' का आरोप लगाते **शेष पृष्ठ 5 पर**

# 'अपमान' के आरोप के साथ भूपेन बोरा का इस्तीफा

**गुवाहाटी।** असम कांग्रेस में अंदरूनी संकट खुलकर सामने आ गया है। पूर्व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष भूपेन कुमार बोरा ने पार्टी से इस्तीफा देते हुए वर्तमान नेतृत्व पर 'अपमान' का आरोप लगाया है। उनके भाजपा में शामिल होने की अटकलों ने सियासी हलचल और तेज **शेष पृष्ठ 3 पर**

### 'भाजपा में जाने की स्क्रिप्टेड तैयारी'

### कांग्रेस में घमासान

असम प्रदेश कांग्रेस कमेटी (एपीसीसी) अध्यक्ष गौरव गोगोई ने भूपेन बोरा के आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि यह सब भाजपा में जाने का बहाना है। गोगोई ने कहा, 'जब भी कोई भाजपा में शामिल होता है, उसे एक स्क्रिप्ट दी जाती है। असम की जनता समझ रही है कि यह अचानक लिया गया भावनात्मक फैसला नहीं, बल्कि राजनीतिक तैयारी है।'

**अंदर पढ़ें**

3. ☛असम की तीनों राज्यसभा सीटों पर भाजपा का दावा
4. ☛किस राह पर बंगाल ?
5. ☛जो भूल गए, उन्हें बताना है कि वे हिंदू हैं : भागवत
7. ☛ज्ञान-प्रेम-मर्यादा की त्रिवेणी : कबीर, सूर और तुलसी
8. ☛भारतीय टी20 क्रिकेट का आसमान छूता सितारा
9. ☛बांग्लादेश में बीएनपी की आंधी
10. ☛सोशल मीडिया : पढ़ाई में बाधा या भविष्य का अवसर
11. ☛'महामुकाबला' या सिर्फ मार्केटिंग

# होलिका दहन के दिन लगेगा साल का पहला पूर्ण चंद्र ग्रहण

**साल** 2026 में 17 फरवरी को पड़े सूर्य ग्रहण के ठीक 15 दिन बाद, 3 मार्च 2026 को होलिका दहन के दिन वर्ष का पहला पूर्ण चंद्र ग्रहण लगेगा। यह संयोग खगोलीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है क्योंकि सूर्य और चंद्र ग्रहण लगभग 15 दिनों के अंतराल पर तब ही पड़ते हैं जब सूर्य, पृथ्वी और चंद्रमा एक ही समतल (एक्लिप्टिक प्लेन) पर आ जाते हैं।

वैदिक ज्योतिष में इसे अत्यंत प्रभावशाली माना जाता है, जबकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह पृथ्वी की छाया के चंद्रमा पर पूर्ण रूप से पड़ने की प्रक्रिया है।

यह ग्रहण भारत, पूर्वी एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया, ऑस्ट्रेलिया, प्रशांत महासागर क्षेत्र, उत्तर अमेरिका तथा दक्षिण अमेरिका के उत्तरी हिस्सों में दिखाई देगा।

## चंद्र ग्रहण 2026 : समय और दृश्यता

**तारीख : 3 मार्च 2026**
**ग्रहण प्रारंभ : दोपहर 2 बजकर 16 मिनट**
**ग्रहण समाप्ति : शाम 7 बजकर 52 मिनट**

भारत के अधिकांश हिस्सों में आंशिक चंद्र ग्रहण दृश्य होगा, जबकि पश्चिमी भारत के कुछ क्षेत्रों में प्रच्छाया (पेनुम्ब्रल) प्रभाव अधिक रहेगा। चूंकि ग्रहण का प्रमुख भाग शाम के समय रहेगा, इसलिए देश के कई भागों में यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकेगा।

**होलिका दहन के साथ ग्रहण का संयोग :** 3 मार्च 2026 को होलिका दहन का पर्व भी मनाया जाएगा, जो होली से एक दिन पूर्व मनाया जाता है। इस प्रकार धार्मिक और खगोलीय दृष्टि से यह दिन विशेष महत्व रखता है।

ज्योतिष शास्त्र में पूर्णिमा तिथि पर लगने वाला चंद्र ग्रहण मन और भावनाओं पर प्रभाव डालने वाला माना जाता है, क्योंकि चंद्रमा मन का कारक ग्रह है। व्यापार में आर्थिक वृद्धि और प्रेम संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

**वैज्ञानिक और धार्मिक सावधानियां :** वैज्ञानिक दृष्टि से चंद्र ग्रहण एक प्राकृतिक खगोलीय घटना है और इसका मानव जीवन पर प्रत्यक्ष भौतिक प्रभाव सिद्ध नहीं है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार ग्रहण काल में- मंत्र जाप और ध्यान करना शुभ माना जाता है। गर्भवती महिलाओं को विशेष सावधानी बरतने की सलाह दी जाती है। ग्रहण समाप्ति के बाद स्नान और दान का महत्व बताया गया है।

यह पूर्ण चंद्र ग्रहण खगोलीय, धार्मिक और ज्योतिषीय दृष्टि से महत्वपूर्ण रहेगा। होलिका दहन के दिन पड़ने वाला यह ग्रहण न केवल आकाशीय दृश्य प्रस्तुत करेगा, बल्कि कई राशियों के लिए नए अवसरों और सकारात्मक बदलाव के संकेत भी दे सकता है।

# सूर्य : ज्योतिष का आत्मतत्व

भारतीय ज्योतिष में नवग्रहों का विशेष महत्व है, और उनमें भी सूर्य को आत्मा का कारक तथा ग्रहों का राजा माना गया है। बिना ग्रहों के ज्ञान के ज्योतिष अधूरा है, और ग्रहों में सूर्य का स्थान सर्वोच्च है। नवग्रह स्तुति में कहा गया है-

*'जाबाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम।*
*तमोरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम॥'*

अर्थात् जो जवा-कुसुम के समान तेजस्वी हैं, महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, अंधकार का नाश करने वाले और पापों को हरने वाले हैं-ऐसे दिवाकर को मैं नमन करता हूं। ज्योतिषीय दृष्टि से सूर्य केवल बाहरी प्रकाश ही नहीं, बल्कि आत्मिक चेतना का भी प्रतीक है। मन का कारक चंद्रमा है, और जब चंद्रमा सूर्य के समक्ष सप्तम भाव में आता है, तब पूर्णिमा होती है। यह संकेत देता है कि जब मन आत्मा के प्रकाश से पूर्ण होता है, तब जीवन में पूर्णता आती है।

शास्त्रों में सूर्य को समस्त जगत की आत्मा कहा गया है। आत्मबल सुदृढ़ हो तो व्यक्ति अधर्म के मार्ग पर नहीं चलता। इसी कारण सूर्य को पापों का नाशक माना गया है।

कुंडली में सूर्य पिता, सरकार, प्रशासन, अधिकार, सम्मान, सरकारी नौकरी, नेतृत्व क्षमता, हड्डियां, नेत्र, सिर संबंधी रोग तथा पूर्व दिशा का स्वामी माना जाता है। जन्मकुंडली में सूर्य की शुभ या अशुभ स्थिति के अनुसार व्यक्ति को इन क्षेत्रों में फल प्राप्त होते हैं। अत: स्पष्ट है कि सूर्य केवल एक नक्षत्र नहीं, बल्कि जीवन की ऊर्जा, आत्मविश्वास और धर्मबोध का स्रोत है। ज्योतिष में सूर्य की सही समझ जीवन को सही दिशा देने में सहायक सिद्ध होती है।

(लेखक विश्व ज्योतिष विद्यापीठ, असम के प्रोफेसर हैं। मोबाइल: 9854026779 )

## पृष्ठ 1 का शेषांश...

### लोकतंत्र का पर्व

होगा। चुनाव नजदीक आते ही आरोप-प्रत्यारोप और बयानबाजी तेज हो जाती है। धार्मिक और जातीय पहचान का सवाल अक्सर बहस पर हावी हो जाता है। यह जरूरी है कि राजनीतिक दल असम की विविधता और सामाजिक समरसता को प्राथमिकता दें।

ध्रुवीकरण अल्पकालिक राजनीतिक लाभ दे सकता है, पर दीर्घकाल में समाज को विभाजित करता है। असम की बहु-सांस्कृतिक पहचान उसकी ताकत है, कमजोरी नहीं।

इस बार चुनाव में दलबदल और आंतरिक मतभेद भी चर्चा में हैं। परंतु लोकतंत्र का मूल तत्व संगठनात्मक मजबूती और नीति की स्पष्टता है, न कि केवल चेहरे। मतदाता अब यह देख रहा है कि किस दल के पास स्पष्ट दृष्टि, ठोस योजना और स्थिर नेतृत्व है।

असम की बड़ी आबादी युवा है। डिजिटल युग में यह वर्ग अधिक जागरूक और मुखर है। शिक्षा, कौशल विकास और रोजगार उनके प्रमुख मुद्दे हैं। यदि राजनीतिक दल युवा आकांक्षाओं को समझते हैं, तो भविष्य की राजनीति का स्वरूप बदल सकता है।

असम विधानसभा चुनाव को केवल सत्ता की होड़ के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यह राज्य की सामाजिक समरसता, आर्थिक प्रगति और सांस्कृतिक अस्मिता की परीक्षा भी है। मतदाता को भय या भावनात्मक उकसावे से नहीं, बल्कि विवेक और तथ्य के आधार पर निर्णय लेना चाहिए। लोकतंत्र की असली शक्ति जागरूक नागरिक है और असम की जनता ने हर बार यह साबित किया है कि वह अपने अधिकार और जिम्मेदारी दोनों को समझती है।

आने वाले दिनों में चुनावी शोर बढ़ेगा, वादे भी होंगे और वाद-विवाद भी। पर अंतत: फैसला जनता के हाथ में है और वही असम के भविष्य की दिशा तय करेगी।

## साप्ताहिक राशिफल

**20 से 26 फरवरी 2026 ।।** विक्रम संवत 2082-मास : फाल्गुन, पक्ष : शुक्ल- तृतीया

**मेष**

**सप्ताह** की शुरुआत में कार्यों के प्रति सावधानी रखें। वाहन चलाते समय विशेष सतर्कता बरतें। अनावश्यक खर्च से बचें और समय का सदुपयोग करें। सप्ताह के उत्तरार्ध में आर्थिक एवं व्यावसायिक लाभ के संकेत हैं।

**वृषभ**

**नए** कार्यों की शुरुआत के लिए समय अनुकूल है। निवेश करते समय सोच-समझकर निर्णय लें। कार्यक्षेत्र में थोड़ा अधिक परिश्रम करना पड़ सकता है, जिसका सकारात्मक परिणाम प्राप्त होगा।

**मिथुन**

**यह** सप्ताह आपके लिए शुभ एवं सफलतादायक रहेगा। आर्थिक एवं व्यावसायिक उन्नति के योग बन रहे हैं। समय का सही प्रबंधन करने पर निश्चित रूप से सफलता मिलेगी।

**कर्क**

**यह** सप्ताह आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा। कानूनी मामलों एवं सरकारी कार्यों में सावधानी बरतें। शुभ समाचार मिलने से परिवार में प्रसन्नता का वातावरण बनेगा।

**सिंह**

**लंबी** या छोटी यात्राओं के योग हैं। सामाजिक जीवन में सक्रियता बढ़ेगी। विरोधियों से सावधान रहें तथा परिश्रम से लाभ प्राप्त होगा। सप्ताह आपके लिए उत्साहवर्धक रहेगा।

**कन्या**

**अपने** कार्यों पर पूरा ध्यान दें। व्यर्थ के विवादों से दूर रहें। किसी नए अवसर का लाभ मिल सकता है। निवेश से पहले अच्छी तरह विचार अवश्य करें।

**तुला**

**सप्ताह** की शुरुआत में कोई महत्वपूर्ण कार्य संपन्न हो सकता है। इससे जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आएगा। पारिवारिक सुख-शांति बनी रहेगी।

**वृश्चिक**

**यह** सप्ताह मध्यम फलदायक रहेगा। धैर्य एवं संयम बनाए रखें। सोच-विचार कर निर्णय लें और जल्दबाजी से बचें। परिश्रम का फल अवश्य मिलेगा।

**धनु**

**सप्ताह** आर्थिक एवं व्यावसायिक दृष्टि से लाभकारी है। व्यापारिक यात्रा के योग बन रहे हैं। तार्किक विवादों से बचें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

**मकर**

**आर्थिक** रूप से उन्नति संभव है। किसी नए व्यापार या तकनीकी क्षेत्र में पहल लाभदायक सिद्ध हो सकती है। शिक्षा के क्षेत्र में भी सफलता के संकेत हैं।

**कुंभ**

**परिवार** में मांगलिक कार्य होने की संभावना है। किसी प्रिय व्यक्ति से मुलाकात होगी। आर्थिक एवं व्यावसायिक उन्नति के योग हैं। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

**मीन**

**इस** सप्ताह उतार-चढ़ाव की स्थिति रह सकती है, परंतु धैर्य रखने से समस्याओं का समाधान होगा। खर्चों पर नियंत्रण रखें और कार्यों में संतुलन बनाए रखें।

### सप्ताह के पर्व/त्योहार

**शनिवार, 21 फरवरी :** विनायकी श्री गणेश चतुर्थी, **रविवार, 22 फरवरी :** यज्ञोपवीत जयंती, **मंगलवार, 24 फरवरी :** दुर्गाष्टमी, शीतला अष्टमी

●ज्योतिर्विद् आचार्य अखिलेश्वर शुक्ल
भाग्योदय : पहला तल्ला, सेंट्रल प्लाजा, एमएस रोड
फैंसी बाजार, गुवाहाटी-781001 मो.-94350 40387

# असम की तीनों राज्यसभा सीटों पर भाजपा का दावा

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

## उम्मीदवार लगभग तय, 'क्लीन स्वीप' का भरोसा : हिमंत

असम से खाली हो रही तीन राज्यसभा सीटों पर सत्तारूढ़ दल ने पूरा दम लगाने का संकेत दिया है। मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने दावा किया कि तीनों सीटों के लिए उम्मीदवार लगभग तय हो चुके हैं और भारतीय जनता पार्टी सभी सीटों पर चुनाव लड़ेगी।

उन्होंने दावा किया कि पार्टी को 'क्लीन स्वीप' की उम्मीद है।

राज्यसभा चुनाव अप्रत्यक्ष मतदान से होते हैं, जिसमें विधायक वोट करते हैं। असम विधानसभा में भाजपा और उसके सहयोगी दलों की मजबूत स्थिति को देखते हुए पार्टी आत्मविश्वास से भरी नजर आ रही है।

126 सदस्यीय विधानसभा में भाजपा के पास 64 विधायक हैं, जबकि सहयोगी दलों असम गण परिषद, यूपीपीएल के समर्थन से सत्तापक्ष का आंकड़ा और मजबूत हो जाता है। यही गणित भाजपा के दावे की आधारशिला है।

मुख्यमंत्री ने संकेत दिया कि उम्मीदवारों के नाम लगभग अंतिम रूप ले चुके हैं। हालांकि आधिकारिक घोषणा अभी शेष है, लेकिन आंतरिक परामर्श तेज हो चुका है।

राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि राज्यसभा की ये सीटें न केवल संसदीय प्रतिनिधित्व का सवाल हैं, बल्कि विधानसभा चुनाव से पहले राजनीतिक शक्ति प्रदर्शन का भी अवसर हैं।

विपक्षी दलों के लिए यह चुनाव संख्या बल की कसौटी साबित होगा। यदि भाजपा तीनों सीटें जीतती है, तो यह विधानसभा चुनाव से पहले उसके मनोबल को और ऊंचा करेगा।

# विस चुनाव : फरवरी अंत तक कांग्रेस की पहली सूची संभव

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

## करीब 80 उम्मीदवारों पर मुहर की तैयारी

असम विधानसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस ने अपनी तैयारियां तेज कर दी हैं। असम प्रदेश कांग्रेस कमेटी (एपीसीसी) अध्यक्ष गौरव गोगोई ने संकेत दिया है कि पार्टी की पहली उम्मीदवार सूची फरवरी के अंत तक जारी की जा सकती है।

प्रेस वार्ता में गोगोई ने कहा कि केंद्रीय नेतृत्व ने स्क्रीनिंग प्रक्रिया शीघ्र पूरी करने के निर्देश दिए हैं। प्रारंभिक चरण में लगभग 80 उम्मीदवारों के नाम अंतिम रूप दिए जाने की संभावना है।

यह घोषणा ऐसे समय आई है जब प्रियंका गांधी वाड्रा दो दिवसीय दौरे पर असम पहुंची हैं। प्रियंका, जो चुनावी स्क्रीनिंग प्रक्रिया से जुड़ी हैं, प्रदेश कांग्रेस पदाधिकारियों, पर्यवेक्षकों, विधायकों और विभिन्न इकाइयों के नेताओं के साथ बैठकें की।

पार्टी सूत्रों के अनुसार, उम्मीदवार चयन में जमीनी फीडबैक और संगठनात्मक मजबूती को प्राथमिकता दी जाएगी।

### गठबंधन की रणनीति

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गौरव गोगोई ने संकेत दिया कि कांग्रेस-नेतृत्व वाला विपक्षी गठबंधन साझा मंच पर चुनाव लड़ सकता है। सीट बंटवारे को लेकर सहयोगी दलों के साथ बातचीत जारी है।

### समय से पहले तैयारी की कोशिश

कांग्रेस इस बार उम्मीदवारों की घोषणा समय रहते कर संगठनात्मक ऊर्जा को मैदान में उतारना चाहती है। फरवरी अंत तक सूची जारी करने की कवायद इसी रणनीति का हिस्सा मानी जा रही है।

शुरुआती सूची जारी कर कांग्रेस स्पष्ट संदेश देना चाहती है कि चुनाव की घड़ी नजदीक है और रणनीति अब कागज से जमीन पर उतर रही है।

*महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर अन्य शिवालयों की तरह ही गुवाहाटी के ज्योतिकुची स्थित श्री श्री गणेश-शिव-हनुमान हनुमान मंदिर में धूमधाम से पूजा-अर्चना की गई। इस मौके पर भागवतधाम महिला नाम पार्टी एवं ज्योतिकुची सेमोनिया नाम दल ने नाम-कीर्तन कर माहौल को भक्तिमय बना दिया। कार्यक्रम में क्षेत्र के अनेक गणमान्य नागरिकों एवं भक्तजनों की उपस्थिति रही। आयोजन समिति में प्रमुख रूप से प्रदीप कुमार डेका, अंजन डेका, शंकर कुमार साह, विकास दास, दीनदयाल शर्मा एवं अभिषेक शर्मा ने सक्रिय भूमिका निभाई। अंत में प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। आयोजन को लेकर स्थानीय लोगों में विशेष उत्साह देखने को मिला।*

# यूपीपीएल की 'एकला चलो' नीति 21 सीटों पर उतारेगी उम्मीदवार

जन जन विचार
...✍ ढेकियाजुली

यूनाइटेड पीपुल्स पार्टी लिबरल (यूपीपीएल) ने आगामी विधानसभा चुनाव में 21 सीटों पर अकेले चुनाव लड़ने की घोषणा कर बोडोलैंड प्रादेशिक क्षेत्र (बीटीआर) की राजनीति में नई हलचल पैदा कर दी है। पार्टी अध्यक्ष प्रमोद बोडो के नेतृत्व में लिया गया यह निर्णय क्षेत्रीय राजनीति में एक साहसिक रणनीतिक कदम माना जा रहा है।

पार्टी सूत्रों के अनुसार, यूपीपीएल बीटीआर की सभी 15 सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारेगी। इसके अतिरिक्त क्षेत्र से बाहर की 6 महत्वपूर्ण सीटों पर भी चुनाव लड़ने की तैयारी पूरी कर ली गई है। इस प्रकार पार्टी कुल 21 सीटों पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराएगी। बताया गया है कि प्रत्येक सीट के लिए दो-दो संभावित उम्मीदवारों के नामों पर गहन विचार-विमर्श किया जा चुका है

और अंतिम सूची शीघ्र जारी की जाएगी। बीटीआर से बाहर जिन सीटों को विशेष प्राथमिकता दी गई है, उनमें ढेकियाजुली प्रमुख मानी जा रही है।

## पृष्ठ 1 का शेषांश...

### रंगाली बिहू के रंग में...

तिथियों की घोषणा करेगा।

**मतदाता सूची पर सख्त रुख** : हाल ही में हुए विशेष पुनरीक्षण (एसआर) के दौरान 2.43 लाख नाम मतदाता सूची से हटाए गए। अब तक 500 से अधिक अपीलें दायर हुई हैं। आयोग ने इसे सूची की 'मजबूती' बताया और दो टूक कहा, 'न तो कोई पात्र मतदाता छूटेगा, न ही कोई अपात्र शामिल होगा।'

**चुनाव में बदलाव** : असम में पहली बार कई अहम व्यवस्थाएं लागू होंगी- मतदान केंद्रों के बाहर मोबाइल जमा काउंटर, मतपत्रों पर स्पष्ट फोटो और बड़ा फॉन्ट, प्रति मतदान केंद्र अधिकतम 1,200 मतदाता, सभी केंद्रों पर 100 प्रतिशत वेबकास्टिंग, पार्टी सहायता डेस्क 100 मीटर दूर, चुनाव सेवाओं के लिए 'ईसीआईनेट' डिजिटल ऐप। इन कदमों को पारदर्शिता और मतदाता सुविधा की दिशा में बड़ा सुधार माना जा रहा है।

**पुख्ता तैयारियां** : राज्य में कुल 31,486 मतदान केंद्र स्थापित किए जाएंगे-27,711 ग्रामीण और 3,775 शहरी क्षेत्रों में। औसतन प्रति केंद्र 793 मतदाता होंगे। 126 आदर्श केंद्र और 3,716 महिला प्रबंधित केंद्र भी बनाए जाएंगे।

सभी केंद्रों पर पेयजल, शौचालय, रैंप, व्हीलचेयर, रोशनी और छाया जैसी अनिवार्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी।

**कानून से ऊपर कुछ नहीं** : मुख्य चुनाव आयुक्त ने स्पष्ट किया कि चुनाव 'बिना भय और पक्षपात' कराए जाएंगे। प्रशासन, पुलिस और प्रवर्तन एजेंसियों को निष्पक्षता बरतने के सख्त निर्देश दिए गए हैं।

### 'अपमान' के आरोप...

कर दी है। बोरा ने दावा किया कि उन्होंने कांग्रेस को 32 वर्ष दिए, लेकिन हाल के महीनों में उन्हें बार-बार सार्वजनिक रूप से अपमानित किया गया। उनका कहना है कि उन्होंने इस विषय में शीर्ष नेतृत्व से भी बात की, पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई।

बोरा ने आरोप लगाया कि गठबंधन वार्ताओं और उपचुनाव टिकट वितरण में उनके साथ असहमति और असम्मान का व्यवहार हुआ। उन्होंने कहा कि कुछ फैसले उनकी जानकारी या सहमति के बिना घोषित किए गए, जिससे उनकी स्थिति कमजोर हुई। उन्होंने यह भी दावा किया कि एक वीडियो कांफ्रेंस के दौरान और बाद की बैठकों में उनके सुझावों को दरकिनार किया गया।

## संपादकीय

# हर बूथ जीतने का लक्ष्य

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन ने असम में हर बूथ पर 50 प्रतिशत वोट का लक्ष्य रखकर चुनावी संघर्ष को आक्रामक मोड़ दे दिया है। यह केवल जीत का आह्वान नहीं, बल्कि निर्णायक राजनीतिक वर्चस्व की घोषणा है।

पार्टी ने कांग्रेस पर वोट बैंक की राजनीति का आरोप लगाया है और बांग्लादेशी घुसपैठ को बड़ा मुद्दा बनाया है। पर सवाल यह है कि क्या चुनाव केवल ध्रुवीकरण और आरोपों से जीते जाते हैं? जनता अब नारों से अधिक परिणाम चाहती है- रोजगार, महंगाई पर नियंत्रण, शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार।

50 प्रतिशत वोट का लक्ष्य महत्वाकांक्षी है, लेकिन क्या 50 प्रतिशत समस्याओं के समाधान का भी उतना ही ठोस संकल्प है? लोकतंत्र में 'सफाया' की भाषा आकर्षक हो सकती है, पर स्वस्थ विपक्ष ही जवाबदेही सुनिश्चित करता है।

असम की जनता को तय करना है कि वह आंकड़ों की राजनीति चुनेगी या ठोस कामकाज की। लोकतंत्र में सबसे बड़ी जीत 50 प्रतिशत वोट नहीं, बल्कि 100 प्रतिशत विश्वास है।

चुनाव केवल गणित का खेल नहीं, जनभावनाओं की कसौटी भी है। यदि लक्ष्य केवल सीटों का विस्तार रह जाए और जनजीवन के वास्तविक प्रश्न पीछे छूट जाएं, तो लोकतंत्र खोखला हो जाता है।

## सुलगता सवाल? आपके विचार

# युवाओं से विनम्र निवेदन

हृदय में गहन प्रसन्नता और आशा का भाव लिए मैं यह पत्र लिख रहा हूं। जन जन विचार का नवीन अंक पढ़ते हुए ऐसा प्रतीत हुआ मानो समाज की निस्तब्ध पीड़ा को शब्द मिल गए हों। यह केवल एक समाचार पत्र नहीं, बल्कि समाज की धड़कनों को सुनने और उन्हें दिशा देने वाला एक सशक्त मंच बनता जा रहा है। इसके प्रत्येक पृष्ठ में समाज के प्रति संवेदना, उत्तरदायित्व और सकारात्मक परिवर्तन की आकांक्षा स्पष्ट झलकती है।

आज जब समाज अनेक प्रकार की नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चुनौतियों से जूझ रहा है, ऐसे समय में एक सजग और संवेदनशील पत्रकारिता की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। मुझे विश्वास है कि यह साप्ताहिक हिंदीभाषी समाज की समस्याओं को स्वर देगा, उनके दु:ख-दर्द को समझेगा और समाधान की राह दिखाएगा। साथ ही यह समाज के प्रत्येक वर्ग (चाहे वह किसी भी पृष्ठभूमि से क्यों न हो) को समान रूप से प्रेरित और मार्गदर्शित करेगा।

मेरा हृदय विशेष रूप से युवाओं को लेकर चिंतित है। आज की युवा पीढ़ी अपार ऊर्जा और प्रतिभा से परिपूर्ण है, किंतु कुछ भटकाव-जैसे नशे की लत, विशेषकर गुटखा और तंबाकू जैसी घातक आदतें-उनके उज्ज्वल भविष्य पर छाया डाल रही हैं। यह केवल एक व्यक्तिगत कमजोरी नहीं, बल्कि पूरे समाज की सामूहिक पीड़ा है। मैं युवाओं से हाथ जोड़कर निवेदन करता हूं कि वे इन क्षणिक आकर्षणों से दूर रहें और अपने जीवन को महान उद्देश्य की ओर अग्रसर करें।

**शंकर कुमार साह, ज्योतिकुची, गुवाहाटी। मो. 8822749501**

# किस राह पर बंगाल?

**जन जन विचार**
*...✍ ललित गर्ग*

पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव की औपचारिक घोषणा भले अभी बाकी हो, पर राजनीतिक रणभेरी बज चुकी है। इस बार संकेत साफ हैं-चुनाव विकास बनाम विकास के दावे पर नहीं, बल्कि पहचान, अस्मिता और धर्म की ध्वजा के इर्द-गिर्द घूम सकता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सौ वर्ष पूरे होने के अवसर पर राज्य भर में प्रस्तावित हिंदू सम्मेलनों को भारतीय जनता पार्टी एक वैचारिक उत्सव भर नहीं, बल्कि चुनावी अवसर में बदलने की रणनीति पर आगे बढ़ती दिख रही है। दूसरी ओर ममता बनर्जी ने भी यह समझ लिया है कि यदि चुनाव की जमीन धार्मिक विमर्श पर खिसकती है तो उसे खाली नहीं छोड़ा जा सकता। कोलकाता के न्यू टाउन में 'दुर्गा आंगन' का शिलान्यास और उसे बंगाली अस्मिता से जोड़ने का प्रयास इसी रणनीतिक सजगता का हिस्सा है।

बंगाल की राजनीति लंबे समय तक वर्ग-संघर्ष, वाम वैचारिकी और सामाजिक न्याय के नारों के इर्द-गिर्द घूमती रही। लगभग तीन दशक तक भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के नेतृत्व में वाम मोर्चा सत्ता में रहा। उससे पहले भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रभुत्व था। किंतु 2011 में सत्ता परिवर्तन के साथ एक नई धुरी बनी-तृणमूल बनाम भाजपा। आज स्थिति यह है कि वाम और कांग्रेस हाशिए पर हैं और मुकाबला दो ध्रुवों के बीच सिमट चुका है। यही द्विध्रुवीयता चुनाव को अधिक तीखा और अधिक पहचान-केंद्रित बना रही है। भाजपा का अभियान चार प्रमुख सूत्रों पर टिका है-बंगाल में हिंदू खतरे में है, बांग्लादेशी घुसपैठ, महिलाओं की असुरक्षा और भ्रष्टाचार। सीमावर्ती जिलों का उदाहरण देकर यह संदेश गढ़ा जा रहा है कि जनसांख्यिकीय संतुलन बदल रहा है। अवैध घुसपैठ का प्रश्न नया नहीं है, पर उसे इस समय राजनीतिक ऊर्जा के साथ जोड़ा जा रहा है। आरजी कर मेडिकल कॉलेज की घटना, शिक्षक भर्ती घोटाले, हिंदुओं पर बढ़ते अत्याचार एवं भ्रष्टाचार जैसे प्रसंगों को शासन की विफलता के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। भाजपा का लक्ष्य स्पष्ट है-70 प्रतिशत हिंदू मतदाताओं में एक साझा असुरक्षा-बोध निर्मित करना, हिंदुओं को जागृत करना और उसे मतदान व्यवहार में रूपांतरित करना। आज बंगाल में विकास की सबसे बड़ी बाधा घुसपैठियों का बढ़ना है। घुसपैठियों पर विराम लगाना चाहिए न कि इस मुद्दे पर राजनीति हो।

ममता बनर्जी की चुनौती दोहरी है। एक ओर उन्हें यह संदेश देना है कि वे अल्पसंख्यकों की संरक्षक हैं, दूसरी ओर हिंदू मतदाताओं को यह विश्वास भी दिलाना है कि उनकी आस्था और अस्मिता सुरक्षित है। 2021 के चुनाव में जब भाजपा ने 'जय श्रीराम' के नारे को आक्रामक रूप से उछाला, तब ममता ने 'जय मां दुर्गा' और 'चंडी पाठ' के माध्यम से एक सांस्कृतिक प्रत्युत्तर दिया था। इस बार वे दुर्गा आंगन जैसे प्रतीकों के जरिए यह संकेत दे रही हैं कि बंगाली हिंदू पहचान भाजपा की बपौती नहीं है। वे धर्म को राष्ट्रवाद की बजाय क्षेत्रीय अस्मिता के साथ जोड़ती हैं-'बंगाल अपनी संस्कृति से हिंदू है, पर उसकी राजनीति बहुलतावादी है'-यह उनका अंतर्निहित संदेश है। इसी बीच मुर्शिदाबाद में पूर्व तृणमूल नेता हुमायूं कबीर द्वारा 'बाबरी मस्जिद' के शिलान्यास की पहल ने नई जटिलता जोड़ दी है। इससे मुस्लिम मतदाताओं के भीतर एक अलग ध्रुवीकरण की संभावना पैदा हुई है। यदि मुस्लिम वोटों का बंटवारा होता है, तो तृणमूल का गणित प्रभावित हो सकता है। 2021 में उसे लगभग 48 प्रतिशत वोट और 223 सीटें मिली थीं-जिसमें मुस्लिम मतों का एकमुश्त समर्थन निर्णायक था। भाजपा 38 प्रतिशत वोट के साथ 65 सीटें जीतकर मुख्य विपक्ष बनी। ऐसे में यदि मुस्लिम मत 5-10 प्रतिशत भी इधर-उधर खिसकते हैं, तो कई सीटों का परिणाम बदल सकता है और भाजपा पूर्ण बहुमत से सत्ता में आ सकती है।

यहां प्रश्न केवल गणित का नहीं, राजनीति के चरित्र का भी है। क्या बंगाल का चुनाव धार्मिक पहचान के उभार का प्रयोगशाला बनेगा? या यह प्रयोग अंतत: विकास, रोजगार और बुनियादी ढांचे के प्रश्नों पर लौटेगा? विडंबना यह है कि जिस बंगाल को कभी देश की आर्थिक राजधानी कहा जाता था-जहां से उद्योग, शिक्षा और सांस्कृतिक नवजागरण की रोशनी फैलती थी, वह आज अधूरे प्रोजेक्ट्स, धीमी औद्योगिक गति और रोजगार के पलायन से जूझ रहा है। कोलकाता की सड़कों पर अधूरी मेट्रो लाइनें और बंद कारखानों की चुप्पी विकास की उस कहानी को बयान करती हैं, जो राजनीतिक नारों के शोर में दब जाती है। 2011 में टाटा के नैनो प्रोजेक्ट का राज्य से बाहर जाना एक प्रतीकात्मक मोड़ था। भूमि अधिग्रहण के प्रश्न पर जनसमर्थन पाने वाली राजनीति ने उद्योग के प्रति संशय का वातावरण भी बनाया। पंद्रह वर्षों बाद भी बंगाल बड़े निवेश की प्रतीक्षा में है। युवा रोजगार के लिए बाहर जा रहे हैं, और कई राज्यों में उन्हें 'बांग्लादेशी' कहकर अपमानित किए जाने की खबरें आती हैं। यह स्थिति केवल आर्थिक नहीं, आत्मसम्मान का प्रश्न भी है। किंतु चुनावी विमर्श में यह पीड़ा गौण हो जाती है, और केंद्र में आ जाता है-धर्म, पहचान और भय।

ममता बनर्जी केंद्र सरकार पर वित्तीय भेदभाव का आरोप लगाती हैं; भाजपा राज्य सरकार पर भ्रष्टाचार और तुष्टीकरण का। सीबीआई और ईडी की कार्रवाइयों को ममता राजनीतिक प्रतिशोध बताती हैं, जबकि भाजपा उन्हें कानून का पालन। इस टकराव ने प्रशासनिक संवाद को भी राजनीतिक संघर्ष में बदल दिया है। परिणाम यह है कि विकास का एजेंडा आरोप-प्रत्यारोप की भेंट चढ़ जाता है। सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि क्या धर्म-आधारित ध्रुवीकरण स्थायी राजनीतिक समाधान दे सकता है? इतिहास बताता है कि धार्मिक उभार अल्पकालिक ऊर्जा तो देता है, पर दीर्घकालिक शासन-क्षमता की कसौटी पर उसे विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के प्रश्नों से जूझना ही पड़ता है। यदि चुनाव केवल 'कौन किसका प्रतिनिधि है' तक सीमित रह गया, तो 'कौन क्या करेगा' का प्रश्न अनुत्तरित रह जाएगा।

बंगाल की आत्मा बहुलतावाद में रही है-रामकृष्ण परमहंस से लेकर रवींद्रनाथ तक, यह भूमि विविध आस्थाओं और विचारों का संगम रही है। यहां दुर्गा पूजा और मुहर्रम दोनों सामाजिक उत्सव का रूप लेते रहे हैं। यदि राजनीति इस सामाजिक ताने-बाने को चुनावी अंकगणित में बदल देगी, तो समाज की संवेदनशीलता पर चोट पहुंचेगी। दूसरी ओर, यदि धार्मिक प्रतीकों का उपयोग सांस्कृतिक आत्मगौरव के साथ विकास-प्रतिबद्धता को जोड़ने में किया जाए, तो वह सकारात्मक भी हो सकता है। इस चुनाव में भाजपा की रणनीति हिंदू मतों का अधिकतम ध्रुवीकरण है; ममता की रणनीति हिंदू पहचान को बंगाली अस्मिता के साथ समाहित कर अल्पसंख्यकों के विश्वास को बनाए रखना है। मुस्लिम दलों की सक्रियता तृणमूल के लिए चुनौती है, पर वह भाजपा के लिए अवसर भी है। यह त्रिकोणीय-संभावना चुनाव को जटिल बनाती है। परंतु अंतत: लोकतंत्र की परिपक्वता मतदाता तय करता है। यदि बंगाल का मतदाता विकास, रोजगार और सुशासन को प्राथमिकता देता है, तो राजनीतिक दलों को अपना विमर्श बदलना होगा। यदि वह पहचान की राजनीति को स्वीकार करता है, तो वही भविष्य की दिशा बनेगी। प्रश्न केवल यह नहीं कि कौन जीतेगा; प्रश्न यह है कि जीत का एजेंडा क्या होगा?

# जो भूल गए, उन्हें बताना है कि वे हिंदू हैं : भागवत

**जाति की चिंता छोड़कर हिंदू समाज के लिए करें काम**

**हम हिंदू समाज के अंग हैं, इस दृष्टि से क्या कर रहे हैं और क्या कर सकते हैं, इस पर विचार करें।**

**भारत के लिए जीने का समय, मरने का नहीं**

**जो लोग हिंदू धर्म में लौटें उनका ख्याल रखना होगा, तेज होना चाहिए घर वापसी का काम**

**हिंदुओं के तीन बच्चे जरूरी**

जन जन विचार
...✍ गोरखपुर

आरएसएस के सरसंघचालक मोहन भागवत ने कहा कि जो लोग यह भूल गए हैं, उन्हें याद दिलाना है कि वे हिंदू हैं, ताकि हिंदू समाज संगठित होकर खड़ा हो सके। संघ हिंदू समाज की बात इसलिए करता है, क्योंकि इस देश में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति हिंदू है।

हिंदू समाज मानता है कि हमारा रास्ता भी सही है और आपका भी। इस समाज में लोगों की रुचि के अनुसार अलग-अलग पंथ और संप्रदाय मौजूद हैं। उन्होंने कहा कि रास्ते अलग हो सकते हैं, लेकिन लक्ष्य एक ही है।

इस धारणा को मानने वाला समाज ही हिंदू समाज है। हिंदू नाम भारत के साथ जुड़ गया है, इसलिए इसी नाम से सनातन जागृत होगा। हमें अपना लक्ष्य पूरा करना है। संघ प्रमुख गोरखपुर के योगिराज गंभीरनाथ प्रेक्षागृह में प्रबुद्धजन संगोष्ठी को संबोधित करने पहुंचे थे।

संघ प्रमुख ने कहा कि हमारा राष्ट्र धर्मप्राण राष्ट्र है। धर्म हमारे आचरण का हिस्सा है। इसके लिए संस्कार की जरूरत थी। पीढ़ी दर पीढ़ी मानवी आदतें बनाई गई, यही संस्कार है। इससे ही संस्कृति बनी। इसी संस्कृति के आधार पर राष्ट्र का निर्माण हुआ। हम एक हैं, इस सत्य को हमने जाना।

संघ की दृष्टि पूर्णतया भारतीय चिंतन पद्धति से ही विकसित हुई है। आज समाज में संघ से अपेक्षाएं बढ़ी हैं। उन्होंने कहा कि विश्व के पास ऐसा कोई तरीका नहीं है जो समाज को सुख और शांति दे सके। इसलिए वह भी हमारी तरफ आशा भरी नजरों से देख रहा है।

भारतवर्ष में पाश्चात्य चिंतन का प्रभाव पड़ने लगा था, जिसने भारतीय ज्ञान परंपरा को खंडित करने का प्रयत्न किया और अपने चिंतन को स्थापित करने का प्रयास किया। लेकिन उनकी चिंतन पद्धति अधूरी थी। भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित हमारी चिंतन पद्धति ही समाज में उत्पन्न शंकाओं का समाधान कर सकती है।

उन्होंने कहा कि हम जाति की चिंता कर रहे, जबकि हमें बड़े हिंदू समाज के लिए काम करना चाहिए। समाज में यदि सद्भावना नहीं है तो कानून और पुलिस के बावजूद समाज नहीं चलता।

संघ प्रमुख ने कहा कि विदेश में मनुष्य से मनुष्य का संबंध एक सौदा है लेकिन भारत मे मनुष्यों के संबंध का विचार ऐसा नहीं है। यहां संबंध अपनेपन का है। हमारे देश मे अनेक विविधताएं हैं। अनेक रीति रिवाज हैं। यहां विविधता में एकता है। भारत को हम माता मानते हैं।

उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति में हम महिला को वात्सल्य की दृष्टि से देखते हैं। सदियों के आचरण से हमारा यह स्वभाव बना है। हमारे यहां अलग रंग-रूप और वेशभूषा अलगाव का कारण नहीं बनते। हमारे समाज का लक्ष्य जीवन के सत्य को जानना है और जीवन का सत्य भगवान है। यही हमारा समान लक्ष्य और समान संस्कृति है। समाज सद्भाव से चलता है।

उन्होंने कहा कि हम हिंदू समाज के अंग हैं, इस दृष्टि से क्या कर रहे हैं और क्या कर सकते हैं, इस पर विचार करें। सरसंघचालक ने कहा कि आवश्यक है कि अपनी जाति-बिरादरी में चर्चा कर बड़े हिंदू समाज के लिए कार्य करें। समाज स्तर पर कार्य स्वयं करना होगा। संघ के भरोसे नहीं रहना चाहिए। समाज के हर अंग में शक्ति होनी चाहिए।

संघ प्रमुख ने कहा कि समाज को चलाने के लिए खंड स्तर पर समाज के मुखिया लोगों को कार्य करना होगा। मिलकर विचार करेंगे, मिलकर दायित्व लेंगे और कुछ गड़बड़ होगा तो मिलकर सुधार करेंगे। देश ठीक रहेगा तो हम भी ठीक रहेंगे। यह समाज का काम है। समाज करेगा, संघ सहायता करेगा।

### भारत को हिंदू राष्ट्र घोषित करना जरूरी नहीं

**मोहन भागवत ने कहा कि भारत और हिंदू एक ही हैं। भारत को हिंदू राष्ट्र घोषित करने की कोई जरूरत नहीं है। हमारी सभ्यता पहले से ही इसे जाहिर करती है। गुवाहाटी में एक कार्यक्रम के दौरान भागवत ने कहा कि जो भी भारत पर गर्व करता है, वह हिंदू है। हिंदू सिर्फ धार्मिक शब्द नहीं बल्कि एक सभ्यतागत पहचान है, जो हजारों साल की सांस्कृतिक परंपरा से जुड़ी है।**

### हिंदू शब्द संज्ञा नहीं बल्कि विशेषण है

संघ प्रमुख ने कहा कि हिंदू शब्द एक संज्ञा नहीं बल्कि व्याकरण की दृष्टि से एक विशेषण है, जो गुणधर्म बताता है। यह सबको एक साथ चलाता है। समाज सहिष्णुता और समन्वयता से ही चलना चाहिए। अपने स्वार्थ के लिए नहीं, दूसरों के हित के लिए चलना ही भारतीय संस्कृति है। इस सत्य को पहचानने में ही हमें शाश्वत आनंद की प्राप्ति हुई।

# संघ की सबसे बड़ी समस्या हिंदू समाज को जगाना

जन जन विचार
...✍ लखनऊ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि मंदिरों की कमाई का बड़ा हिस्सा जन कल्याण में लगना चाहिए। वे आरएसएस के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में लखनऊ में अपने दो दिवसीय प्रवास के दौरान अंतिम दिन इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में आयोजित प्रमुख जनगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे।

इस दौरान उन्होंने अलग-

### 'जनकल्याण में लगाएं मंदिरों की कमाई'

अलग क्षेत्रों से आए प्रबुद्धजनों के सवालों के जवाब दिए। लालता प्रसाद मिश्र के सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि संघ की सबसे बड़ी समस्या हिंदू समाज ही है क्योंकि हमें उन्हें जगाने में काफी मेहनत करनी पड़ रही है।

डॉ. श्वेता श्रीवास्तव और कर्नल एमके सिंह के सवाल के जवाब में डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि मंदिरों से होने वाली आय को जन कल्याण के लिए लगाना चाहिए और इसकी बागडोर सरकार के हाथों में न होकर जिम्मेदार भक्तों के पास होनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि देश के प्रमुख मंदिरों के संचालन और आय के जन कल्याण के लिए खर्च किए जाने की प्रक्रिया पारदर्शी हो और निष्पक्ष व ईमानदार संस्था की निगरानी में हो। उन्होंने कहा कि संघ इस दिशा में आगे तैयारी कर रहा है, जल्द परिणाम देखने को मिलेगा।

इस दौरान दीनानाथ श्रीवास्तव ने सवाल किया कि यह कहां तक सही है कि भाजपा सरकार को संघ ही संचालित करता है। इस पर उन्होंने कहा कि ऐसा भ्रम अक्सर हो जाता है। हमारे पास ऐसा कोई रिमोट कंट्रोल नहीं है।

उन्होंने कहा कि सरकार चलाना बेहद कठिन काम है, इसलिए हम तो सिर्फ अपना ही काम करते हैं। हां, हम सुझाव दे सकते हैं।

### पृष्ठ 1 का शेषांश...

## रैलियों से रील्स...

दलों ने अपने-अपने आईटी सेल को मजबूत किया है। ये टीमें केवल पोस्ट डालने तक सीमित नहीं हैं; वे ट्रेंड सेट करती हैं, हैशटैग चलाती हैं, वीडियो क्लिप तैयार करती हैं और विरोधियों के नैरेटिव का तुरंत जवाब देती हैं। डेटा विश्लेषण के आधार पर मतदाताओं की उम्र, क्षेत्र और रुचियों के अनुसार संदेश गढ़े जाते हैं। एक ही शहर में दो मतदाताओं को बिल्कुल अलग राजनीतिक संदेश दिखाई दे सकते हैं। यही डिजिटल रणनीति का नया चेहरा है।

**अवसर और आशंका :** डिजिटल मंच ने संवाद का दायरा बढ़ाया है। युवा मतदाता सीधे प्रतिक्रिया दे रहे हैं, स्थानीय मुद्दे तेजी से राष्ट्रीय विमर्श बन रहे हैं। लेकिन इसी के साथ दुष्प्रचार, ट्रोलिंग और संगठित ऑनलाइन हमलों की शिकायतें भी बढ़ी हैं। आईटी सेल की आक्रामक रणनीतियां कई बार स्वस्थ बहस की जगह आरोप-प्रत्यारोप और ध्रुवीकरण को बढ़ावा देती हैं।

अब चुनाव केवल पांच साल में एक बार नहीं-हर दिन लड़ा जा रहा है। हर पोस्ट संभावित प्रचार है, हर वीडियो राजनीतिक संदेश।

### हर बूथ पर 50 फीसदी वोट का लक्ष्य

हुए कहा कि कांग्रेस के पास न नीति है, न नीयत और न ही शासन की क्षमता। उन्होंने दावा किया कि भाजपा सरकार जनता के साथ मिलकर विकास और सुरक्षा के एजेंडे पर काम कर रही है। भाजपा अध्यक्ष ने राज्य सरकार की अवैध प्रवासियों के खिलाफ कार्रवाई का समर्थन किया और कहा कि यह कदम असम के स्वदेशी लोगों के अधिकारों की रक्षा के लिए उठाया गया है। उन्होंने मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा की सराहना करते हुए कहा कि राज्य सरकार ने इस मुद्दे पर 'दृढ़ इच्छाशक्ति' दिखाई है। नबीन ने यह भी दावा किया कि असम में चल रही कार्रवाई का असर पश्चिम बंगाल और केरल जैसे राज्यों में भी दिखाई दे रहा है।

# वीर सावरकर : जिसने जेल की दीवारों पर लिखा इतिहास

**26 फरवरी को जिनकी पुण्यतिथि है**

**क्या** आप कल्पना कर सकते हैं कि एक छोटा-सा बालक, जो अपने दोस्तों के साथ देशभक्ति के गीत गाता था, आगे चलकर अंग्रेजी हुकूमत के लिए सबसे बड़ा चुनौती बन जाएगा? यह कहानी है वीर सावरकर की।

विनायक दामोदर सावरकर का जन्म 28 मई 1883 को महाराष्ट्र के नासिक जिले में हुआ था। उनका पूरा नाम विनायक दामोदर सावरकर था। बचपन से ही वे बहुत साहसी और तेज बुद्धि के थे। जब वे केवल नौ वर्ष के थे, तभी उन्होंने अपने साथियों की एक टोली बनाई, जो देशभक्ति के गीत गाती और भारत को आजाद देखने का सपना देखती थी।

सावरकर जी पढ़ाई में बहुत अच्छे थे। उन्होंने पुणे और बाद में लंदन में शिक्षा प्राप्त की। लंदन में पढ़ाई के दौरान भी वे भारतीय स्वतंत्रता के बारे में लेख और भाषण देते रहे। उन्होंने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम पर एक पुस्तक लिखी, जिसमें उसे भारत का पहला स्वतंत्रता युद्ध बताया गया। उनकी बातों से अंग्रेज सरकार घबरा गई। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

अंग्रेजों ने उन्हें दो-दो आजीवन कारावास (कुल 50 वर्ष) की सजा सुनाई और अंडमान-निकोबार की सेल्युलर जेल भेज दिया। यह जेल 'काला पानी' के नाम से प्रसिद्ध थी।

वहां कैदियों को बहुत कठोर काम करना पड़ता था-तेल कोल्हू चलाना, भारी बोझ उठाना और कम भोजन में दिन बिताना। लेकिन सावरकर जी ने हिम्मत नहीं हारी।

कहा जाता है कि उन्होंने जेल की दीवारों पर कील और पत्थर से हजारों पंक्तियां लिखीं। वे कविताएं और देशभक्ति के संदेश अपने साथियों को याद कराते, ताकि स्वतंत्रता की भावना जीवित रहे।

सावरकर जी केवल क्रांतिकारी ही नहीं थे, बल्कि एक अच्छे लेखक और विचारक भी थे। उन्होंने समाज में फैली छुआछूत और भेदभाव का विरोध किया। वे चाहते थे कि सभी भारतीय एकजुट होकर देश को मजबूत बनाएं। उनका मानना था कि शिक्षा, साहस और संगठन से ही देश आगे बढ़ सकता है।

26 फरवरी 1966 को उनका निधन हो गया। उनकी पुण्यतिथि पर हम उनके त्याग और साहस को याद करते हैं।

## सुविचार

**छोटे कदम भी बड़े सपनों की ओर ले जाते हैं।**

## करो और सीखो

एक पेड़ का चित्र बनाइए और उसके नीचे लिखिए -

*'मैं प्रकृति की रक्षा करूंगा।'*

अपने घर के आसपास एक पौधा लगाइए और उसकी रोज देखभाल कीजिए।

## पहेली

ऐसा कौन-सा फल है, जिसका नाम उल्टा पढ़ो तो भी वही रहता है?

वह क्या है जो पानी में गिरने पर भी भीगता नहीं?

ऐसा कौन-सा महीना है जिसमें 28 दिन होते हैं?

# मेहनती चींटी और आलसी टिड्डा

एक हरे-भरे जंगल में एक छोटी-सी चींटी रहती थी। वह हर दिन मेहनत करती, अनाज के दाने इकट्ठा करती और अपने घर में जमा करती। उसी जंगल में एक टिड्डा भी रहता था। वह दिनभर गाना गाता और खेलता रहता।

चींटी ने कई बार टिड्डे से कहा, 'सर्दी आने वाली है, कुछ भोजन जमा कर लो।'

टिड्डा हंसकर बोला, 'अभी तो मौसम अच्छा है, क्यों चिंता करना?'

कुछ महीनों बाद सर्दी आई। टिड्डे के पास खाने को कुछ भी नहीं था। वह कांपता हुआ चींटी के पास पहुंचा। चींटी ने उसे भोजन दिया, लेकिन साथ ही समझाया, 'समय पर मेहनत ही जीवन में सफलता दिलाती है।'

**सीख : आज की मेहनत, कल की सुरक्षा है।**

**बगल में दिए गए चित्र में प्रारंभ बिंदु S और अंतिम बिंदु F को ध्यानपूर्वक देखें। आपको S से F तक पहुँचने का सही मार्ग खोजना है। आप केवल ऊपर, नीचे , दाएं और बाएं दिशा में ही चल सकते हैं। दीवारों या अवरोधों को पार नहीं कर सकते। ऐसा मार्ग चुनें जिससे आप बिना किसी अवरोध से टकराए F तक पहुंच सकें। यदि एक से अधिक मार्ग संभव हों, तो सबसे छोटा मार्ग चुनने का प्रयास करें। उद्देश्य : प्रारंभ बिंदु से अंतिम बिंदु तक सुरक्षित और सही पथ निर्धारित करना।**

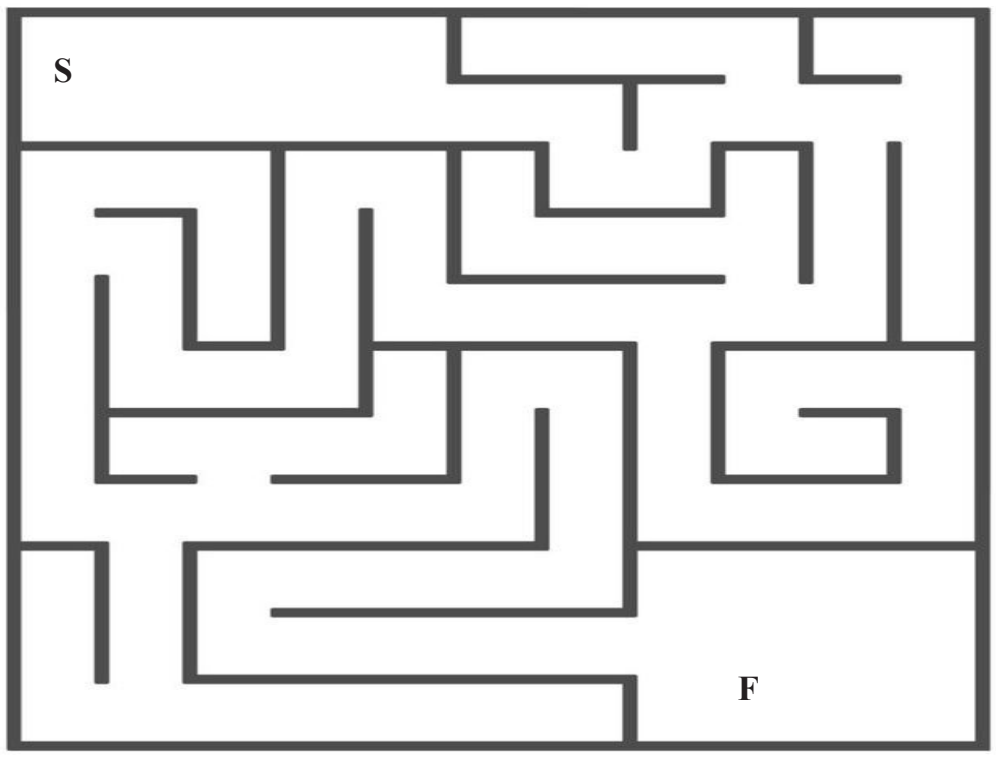


## कविता

### छू लें हम आकाश

नन्हे पंखों में है दम,
छू लें हम आकाश सनम।
मेहनत से जो राह बनाएं,
सपनों को सच हम कर जाएं।
न सूरज से डरना है,
न बादल से घबराना है।
हौसले की रोशनी लेकर,
आगे बढ़ते जाना है।

## विज्ञान प्रयोग

### इंद्रधनुष बनाएं

**सामग्री**

एक गिलास पानी
एक छोटा दर्पण
धूप

**कैसे करें**

दर्पण को पानी में आधा डुबोकर धूप में रखें। सामने सफेद दीवार पर रोशनी डालें।

आपको इंद्रधनुष के रंग दिखाई देंगे!

**सीख :** सफेद रोशनी कई रंगों से मिलकर बनी होती है।

## दिमाग लगाएं

**क) 5 + 3 × 2 = ?**

**ख) एक पेड़ पर 10 आम थे, 3 गिर गए, कितने बचे?**

**ग) वह कौन-सी चीज है जो जितनी निकालो, उतनी बढ़ती जाती है?**

**उत्तर**

क) 11 ख) 7 ग) ज्ञान

# ज्ञान-प्रेम-मर्यादा की त्रिवेणी : कबीर, सूर और तुलसी

जन जन विचार

...✍ डॉ. मुकेश कुमार
हिंदी विभाग,
चौधरी रणबीर सिंह यूनिवर्सिटी
जींद ( हरियाणा)

महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी लिखते हैं कि भारत के सिद्धांत से यथार्थ विश्वकवि कबीर, सूर, तुलसी हैं। भारत का विश्ववाद एक प्रकार से चेतनवाद है , जिसमें अगणित सौरमंडल अपने सृष्टि-नियमों के चक्र से विवर्तित होते जा रहे हैं। सूर ने चेतन की यह क्रिया समझी इसीलिए सकट पग पेलत अर्थात स्थिर होकर क्रमश: चेतन-समाधि में मग्न होने की चेष्टा कर रहे हैं! हर एक केंद्र में वह चेतनस्वरूप विभु मौजूद है! सूर ने कृष्ण के ही उज्ज्वल केंद्र को ग्रहण किया! तुलसी ने राम के केंद्र को और कबीर ने बिना केंद्र के केंद्र को! भारत के सिद्धांत से यथार्थ विश्वकवि ये ही हैं-कबीर, सूरदास और तुलसीदास, जैसे महाशक्ति के आधार-स्तंभ! तुलसीदास भी *उदर मांझ सुन अंडज राया , देख्यौं बहु ब्रह्मांड निकाया* से अगणित विश्व का वर्णन करते हैं, वे जोर देकर कहते हैं कि यह सब मैं निज नयनन देखा! भारत का विश्ववाद इस प्रकार का है! भारत के विश्वकवि जड़ता की धूल पाठकों पर नहीं झोंकते! वे ब्रह्मांडमय चेतन का अंजन उनकी आंखों में लगाते हैं!

भारतीय काव्यपरंपरा में 'विश्वकवि' की संज्ञा केवल व्यापक ख्याति का परिचायक नहीं, अपितु उस महत्व आत्मदृष्टि का द्योतक है, जो समस्त मानवता के दु:ख-सुख, आशा-आकांक्षा, संशय-समाधान और आध्यात्मिक उत्कर्ष को अपने हृदय में धारण कर लेती है। भारत का सिद्धांत यह मानता है कि काव्य का परम प्रयोजन लोकमंगल, चित्तशुद्धि और आत्मोन्नयन है। इस दृष्टि से जब हम मध्यकालीन संत-कवियों की ओर दृष्टिपात करते हैं, तो स्पष्ट प्रतीत होता है कि कबीर, सूरदास और तुलसीदास केवल एक संप्रदाय, भाषा या कालखंड के कवि नहीं हैं, अपितु वे भारतीय आत्मा के त्रिवेणी-संगम के समान हैं-ज्ञान, भक्ति और आचरण की समन्वित धारा। भारत के सिद्धांत से यदि विश्वकवि की संज्ञा किसी को यथार्थत: प्राप्त होती है, तो वह इन्हीं तीनों महापुरुषों को।

भारतीय चिंतन में 'विश्व' का अर्थ केवल भौगोलिक विस्तार नहीं, बल्कि चेतना का विस्तार है। जो कवि मानव को उसके मूल स्वरूप-सत्य, प्रेम और करुणा की ओर उन्मुख करे, वही विश्वकवि है। कबीर ने निर्भीक वाणी में मनुष्य को बाह्याचारों, आडंबरों और संकीर्णताओं से मुक्त होकर आत्मतत्व की खोज करने का आह्वान किया। उनकी दृष्टि में न हिंदू, न मुसलमान केवल साधक है, जो परम सत्य की ओर अग्रसर है। वे कहते हैं कि माला फेरने से नहीं, मन फेरने से साधना सिद्ध होती है। यह उद्घोष केवल पंद्रहवीं शती के भारत के लिए नहीं था; वह आज भी समस्त विश्व के लिए प्रासंगिक है, जहां धर्म के नाम पर विभाजन, अहंकार और हिंसा विद्यमान हैं। कबीर का काव्य मनुष्य को भीतर झांकने की प्रेरणा देता है। यह आत्मालोचन की संस्कृति है, जो सार्वभौमिक है।

*पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।*
*ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय॥*

कबीर की भाषा लोक की भाषा है, पर उसमें दार्शनिक गहनता का अद्भुत संयोग है। वे वेदांत, सूफी मत और योग-साधना के तत्वों को सहज रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनके दोहे किसी ग्रंथालय के पृष्ठों तक सीमित नहीं, वे जनमानस की स्मृति में जीवित हैं। यह जनस्वीकृति ही उनकी विश्वव्यापकता का प्रमाण है। उन्होंने जाति, पंथ, पाखंड और कर्मकांड पर जो प्रहार किए, वे किसी एक समुदाय के विरुद्ध नहीं, बल्कि मनुष्य की अविवेकपूर्ण प्रवृत्तियों के विरुद्ध थे। अत: उनका काव्य कालातीत है। विश्वकवि वह है, जो मनुष्य की भीतरी बेड़ियों को तोड़े, कबीर ने यही किया।

यदि कबीर ज्ञान की ज्वाला हैं, तो सूरदास करुणा और माधुर्य की अमृतधारा। सूरदास ने बालकृष्ण के माध्यम से जो वात्सल्य और प्रेम का विश्व रचा, वह केवल वैष्णव भक्ति का आख्यान नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं का विश्वकोश है। माता और शिशु का संबंध, मित्रता की सरलता, प्रेम की लीलामयता— ये सब तत्व सार्वभौमिक हैं। जब यशोदा कृष्ण को उलाहना देती हैं, तो वह किसी विशेष संस्कृति की घटना नहीं रहती; वह प्रत्येक मां की सहज अनुभूति बन जाती है। सूरदास ने दिव्यता को मानवीय भावों में उतार दिया और मानवीय भावों को दिव्यता तक उठा दिया। यही काव्य का विश्वात्मक स्वरूप है।

सूरदास की विशेषता यह है कि उन्होंने दृष्टिहीन होते हुए भी भावदृष्टि से जगत को आलोकित किया। उनकी काव्यदृष्टि बाह्य नेत्रों पर नहीं, अंत:चेतना पर आधारित थी। वे भक्ति को पलायन नहीं, बल्कि हृदय की परिपक्वता मानते हैं। उनके पदों में करुणा, अनुराग और समर्पण का जो संगीत है, वह भाषा की सीमाओं से परे जाता है। विश्व के किसी भी देश में मातृत्व, स्नेह और प्रेम की अनुभूति समान है; अत: सूरदास का काव्य भी सार्वभौमिक है। विश्वकवि वह है, जो मानवीय भावनाओं की गहराइयों को छू सके; सूरदास इस कसौटी पर पूर्णतया खरे उतरते हैं।

*मैया! मोहि दाऊ बहुत खिझायो।*
*मोसों कहत मोल को लीन्हो, तू जसुमति कब जायो॥*

तुलसीदास भारतीय संस्कृति के आचार-दर्शन के महागायक हैं। उन्होंने रामकथा के माध्यम से केवल एक धार्मिक आख्यान नहीं रचा, बल्कि आदर्श मानव-जीवन की संहिता प्रस्तुत की। राम उनके यहां मर्यादा के प्रतीक हैं-धैर्य, करुणा, सत्य और कर्तव्यनिष्ठा के आदर्श। जब वे रामराज्य की कल्पना करते हैं, तो वह केवल राजनीतिक व्यवस्था नहीं, बल्कि नैतिक समाज का स्वप्न है, जहां परस्पर प्रेम, न्याय और संतुलन हो। यह आदर्श किसी एक देश तक सीमित नहीं; यह विश्वमानव की आकांक्षा है।

तुलसीदास की भाषा में लोक की सरलता और शास्त्र की गंभीरता का समन्वय है। उन्होंने संस्कृत की दार्शनिक परंपरा को अवधी के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाया। यह सांस्कृतिक लोकतंत्रीकरण है। विश्वकवि वह है, जो ज्ञान को विशिष्ट वर्ग की संपत्ति न रहने दे, बल्कि उसे लोकमंगल के लिए उपलब्ध कराए। तुलसीदास ने यही किया। उनके काव्य में भक्ति के साथ नीति, दर्शन और सामाजिक संतुलन का संदेश है। वे केवल ईश्वर-प्रेम के गायक नहीं, बल्कि मानव-धर्म के व्याख्याता हैं।

*परहित सरिस धर्म नहि भाई।*
*पर पीड़ा सम नहि अधमाई॥*

भारत का सिद्धांत 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना पर आधारित है। कबीर ने इसे आत्मिक एकता के रूप में देखा, सूरदास ने प्रेम के रूप में और तुलसीदास ने मर्यादा के रूप में। तीनों के यहां भिन्न-भिन्न मार्ग हैं, पर लक्ष्य एक-मानव का आत्मोद्धार। ज्ञान, प्रेम और आचरण-इन तीनों का समन्वय ही भारतीय दर्शन का सार है। कबीर ज्ञानमार्ग के प्रतिनिधि हैं, सूरदास प्रेममार्ग के और तुलसीदास मर्यादा-समन्वित भक्ति के। तीनों मिलकर भारतीय आध्यात्मिकता की त्रयी निर्मित करते हैं।

विश्वकवि की एक कसौटी यह भी है कि उसका काव्य समय की सीमाओं को लांघकर निरंतर प्रेरणा देता रहे। कबीर के दोहे आज भी सामाजिक चेतना को झकझोरते हैं। सूरदास के पद आज भी संगीत की धारा में गूंजते हैं। तुलसीदास का रामचरित आज भी नैतिक आदर्श का स्रोत है। उनकी वाणी किसी संग्रहालय की वस्तु नहीं, जीवित परंपरा है। यही जीवंतता उन्हें विश्वकवि बनाती है।

इन तीनों कवियों की विशेषता यह भी है कि इन्होंने आध्यात्मिकता को लोकजीवन से जोड़ा। कबीर ने करघे पर बैठकर सत्य का गान किया, सूरदास ने भक्ति को लोकगीतों की लय में पिरोया, तुलसीदास ने कथा-परंपरा के माध्यम से धर्म को उत्सव बना दिया। यह जीवन के साथ एकात्मता है। विश्वकवि वह नहीं, जो केवल कल्पना के आकाश में उड़ता रहे, बल्कि वह, जो धरती पर खड़े होकर आकाश की ओर संकेत करे। ये तीनों कवि इसी संतुलन के प्रतीक हैं।

कबीर का विद्रोह विनाशकारी नहीं, बल्कि निर्मलता का आग्रह है। सूरदास का प्रेम आसक्ति नहीं, बल्कि ईश्वर से आत्मीय संबंध है। तुलसीदास की मर्यादा कठोर अनुशासन नहीं, बल्कि संतुलित जीवन की रीति है। इन तीनों के काव्य में मनुष्य को बेहतर बनाने की आकांक्षा है। यही आकांक्षा उन्हें विश्वकवि की श्रेणी में प्रतिष्ठित करती है।

भारतीय सिद्धान्त में काव्य का संबंध 'श्रेय' और 'प्रेय' के समन्वय से है। जो केवल मनोरंजन करे, वह क्षणिक है; जो आत्मोन्नति का मार्ग दिखाए, वही शाश्वत है। कबीर, सूरदास और तुलसीदास का काव्य मनोरंजन से परे आत्मानुभूति का साधन है। उनके शब्दों में अध्यात्म का आलोक है, पर वह जीवन-विरोधी नहीं; वह जीवन को परिष्कृत करता है। इसीलिए उनका प्रभाव सीमाओं से परे है।

अब बात करते हैं हिंदी साहित्य का इतिहास यदि उसकी मूल संवेदना, उसकी लोकधर्मी चेतना और उसकी आध्यात्मिक ऊंचाइयों के साथ समझना हो, तो यह स्वीकार करना अनिवार्य है कि कबीर, सूरदास और तुलसीदास के बिना वह अधूरा ही नहीं, बल्कि दिशाहीन प्रतीत होगा। हिंदी साहित्य की मध्यकालीन धारा में इन तीनों महाकवियों ने जिस प्रकार भाषा, भाव, दर्शन और लोकजीवन को एक सूत्र में बांधा, वह भारतीय सांस्कृतिक चेतना का अद्वितीय उदाहरण है। इनका योगदान केवल काव्य-रचना तक सीमित नहीं, बल्कि भारतीय समाज के नैतिक, आध्यात्मिक और मानवीय पुनर्निर्माण से भी जुड़ा हुआ है।

कबीर ने हिंदी साहित्य को निर्भीकता, आत्मानुभूति और सामाजिक प्रश्नाकुलता का स्वर प्रदान किया। वे केवल संत नहीं, युगद्रष्टा थे। उनके काव्य में तत्कालीन समाज की रूढ़ियों, आडंबरों और संकीर्णताओं पर तीखा प्रहार मिलता है।

सूरदास ने हिंदी काव्य को माधुर्य, वात्सल्य और भाव-संपन्नता की पराकाष्ठा प्रदान की।

तुलसीदास ने हिंदी साहित्य को मर्यादा, नीति और लोकमंगल की व्यापक दृष्टि प्रदान की। रामकथा के माध्यम से उन्होंने आदर्श मानव-जीवन की रूपरेखा प्रस्तुत की।

# भारतीय टी20 क्रिकेट का आसमान छूता सितारा

जन जन विचार
...✍ स्पोर्ट्स डेस्क

## सूर्य कुमार यादव

पूरा नाम
**सूर्यकुमार अशोक यादव**
जन्म
**14 सितंबर 1990, मुंबई**
मूल निवास
**गाजीपुर, उत्तर प्रदेश**
शिक्षा
**बी.कॉम., पिल्लई कॉलेज, मुंबई**
भूमिका
**दाएं हाथ के मध्यक्रम बल्लेबाज**
अंतर्राष्ट्रीय टीम
**भारत**
कप्तानी
**भारतीय टी20 अंतर्राष्ट्रीय टीम**
**एशिया कप 2025 विजेता टीम के कप्तान**

## कप्तान सूर्या : नई सोच, नई ऊर्जा, नई दिशा

भारतीय क्रिकेट में अगर पिछले कुछ वर्षों में किसी बल्लेबाज ने टी20 प्रारूप की परिभाषा बदली है, तो वह हैं सूर्य कुमार यादव। 14 सितंबर 1990 को मुंबई में जन्मे सूर्यकुमार आशोक यादव आज भारतीय टी20 टीम के कप्तान हैं और आधुनिक क्रिकेट के सबसे आक्रामक तथा रचनात्मक मध्यक्रम बल्लेबाजों में गिने जाते हैं।

उत्तर प्रदेश के गाजीपुर से ताल्लुक रखने वाले परिवार में जन्मे सूर्यकुमार ने बचपन में वाराणसी में अपने चाचा विनोद कुमार यादव के मार्गदर्शन में क्रिकेट की बुनियाद रखी। बाद में मुंबई में कोच अशोक कामत के सान्निध्य में उन्होंने प्रशिक्षण लिया और दिग्गज दिलीप वेंगसरकर की 'एल्फ वेंगसरकर अकादमी' से निखरकर सामने आए।

मुंबई के लिए 2010 में लिस्ट-ए, प्रथम श्रेणी और टी20 क्रिकेट में पदार्पण करने वाले सूर्या ने घरेलू क्रिकेट में लगातार रन बनाकर अपनी पहचान बनाई। 2011-12 रणजी सत्र में 754 रन बनाकर उन्होंने चयनकर्ताओं का ध्यान खींचा।

रोहित शर्मा के टी20 अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद भारतीय टीम एक संक्रमण दौर में थी। ऐसे समय में चयनकर्ताओं ने जिस खिलाड़ी पर भरोसा जताया, वह थे सूर्यकुमार यादव। जुलाई 2024 में उन्हें दोबारा भारतीय टी20 टीम की कमान सौंपी गई। यह सिर्फ नेतृत्व परिवर्तन नहीं था, बल्कि टीम की रणनीति और सोच में भी बदलाव का संकेत था।

सूर्यकुमार की कप्तानी की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सकारात्मक और आक्रामक सोच है। वे खेल को दबाव की जगह अवसर के रूप में देखते हैं। मैदान पर उनकी बॉडी लैंग्वेज आत्मविश्वास से भरी होती है, जो युवा खिलाड़ियों को भी प्रेरित करती है।

कप्तान के रूप में उन्होंने बल्लेबाजी क्रम में लचीलापन, आक्रामक पावरप्ले रणनीति और गेंदबाजों के साहसिक उपयोग पर जोर दिया। वे परिस्थिति के अनुसार निर्णय लेने में विश्वास रखते हैं-चाहे वह स्पिनरों को शुरुआती ओवर देना हो या डेथ ओवरों में जोखिम उठाना।

फरवरी-मार्च 2026 में भारत और श्रीलंका की मेजबानी में आयोजित टी20 विश्व कप में सूर्यकुमार भारत की अगुवाई कर रहे हैं। टूर्नामेंट के पहले मैच में अमेरिका के खिलाफ उन्होंने 49 गेंदों पर 84 रनों की प्रभावशाली पारी खेली। इस पारी के साथ उन्होंने एक खास उपलब्धि भी हासिल की-टी20 अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में कप्तान के रूप में 1000 रन पूरे किए। यह उपलब्धि दर्शाती है कि वे केवल रणनीतिक नेता ही नहीं, बल्कि जिम्मेदारी निभाने वाले बल्लेबाज भी हैं।

अक्सर कहा जाता है कि कप्तानी बल्लेबाजी पर दबाव डालती है, लेकिन सूर्यकुमार ने इसे अपनी ताकत बनाया है। वे टीम की जरूरत के अनुसार खेल की गति तय करते हैं-कभी पारी को संभालते हैं तो कभी रफ्तार बढ़ाते हैं। उनकी कप्तानी में टीम ने युवा और अनुभवी खिलाड़ियों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश की है। वे ड्रेसिंग रूम में खुला संवाद बनाए रखते हैं और खिलाड़ियों को स्वतंत्रता देते हैं।

सूर्यकुमार यादव का नेतृत्व भारतीय टी20 टीम को एक नई पहचान दे रहा है-निडर, आक्रामक और नवाचार से भरी। 2024 विश्व कप की सफलता के बाद 2026 का अभियान उनके लिए एक और बड़ी परीक्षा है।

### विश्व कप का हीरो

2024 के टी20 विश्व कप में सूर्यकुमार भारतीय टीम का अहम हिस्सा थे। फाइनल में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ बाउंड्री लाइन पर लिया गया उनका कैच क्रिकेट इतिहास के महान कैचों में गिना गया। भारत ने सात रन से जीत दर्ज कर दूसरा टी20 विश्व खिताब जीता। इसके बाद 2025 एशिया कप में उन्होंने कप्तान के रूप में टीम को खिताब दिलाया। हालांकि टूर्नामेंट के दौरान एक बयान पर उन्हें जुर्माना भी झेलना पड़ा, लेकिन उन्होंने अपनी पूरी मैच फीस भारतीय सेना और पहलगाम हमले के पीड़ित परिवारों को दान कर एक मिसाल पेश की।

## 'स्काई' आईपीएल में 'मिस्टर 360'

भारतीय प्रीमियर लीग (आईपीएल) ने सूर्यकुमार यादव को वह मंच दिया, जहां उनकी प्रतिभा ने वैश्विक पहचान हासिल की। घरेलू क्रिकेट में निरंतर प्रदर्शन के बाद आईपीएल में मिली भूमिका ने उन्हें न केवल एक विश्वस्तरीय बल्लेबाज बनाया, बल्कि भारतीय टीम के दरवाजे भी खोले।

### शुरुआत-मुंबई से कोलकाता तक

सूर्यकुमार ने 2012 में मुंबई इंडियंस के साथ आईपीएल करियर की शुरुआत की, हालांकि शुरुआती सीजन में उन्हें सीमित अवसर मिले। असली पहचान 2014 में कोलकाता नाइट राइडर्स के साथ मिली, जब टीम ने खिताब जीता।

केकेआर के लिए खेलते हुए सूर्या ने मध्यक्रम में स्थिरता दी। चार सीजन में 600 से अधिक रन बनाकर उन्होंने अपनी उपयोगिता साबित की। उनकी लचीली बल्लेबाजी (कभी एंकर की भूमिका तो कभी आक्रामक फिनिशर) टीम के लिए अहम रही।

### मुंबई इंडियंस में स्वर्णिम दौर

2018 में मुंबई इंडियंस में वापसी के साथ सूर्यकुमार का करियर नई ऊंचाइयों पर पहुंचा। 2019 और 2020 में टीम के खिताबी अभियानों में उनका योगदान निर्णायक रहा। पारी को संभालने और आखिरी ओवरों में रफ्तार बढ़ाने की उनकी क्षमता ने उन्हें टीम का भरोसेमंद बल्लेबाज बना दिया।

### 2023 : करियर का सर्वश्रेष्ठ सीजन

आईपीएल 2023 सूर्यकुमार के लिए ऐतिहासिक रहा। उन्होंने 16 मैचों में 605 रन बनाए और अपना पहला आईपीएल शतक जड़ा। उनकी स्ट्राइक रेट और 360 डिग्री शॉट्स ने दर्शकों को रोमांचित कर दिया। कवर के ऊपर से उठाया गया शॉट हो या फाइन लेग के पीछे खेला गया स्कूप-हर दिशा में रन बटोरने की कला ने उन्हें 'मिस्टर 360' की उपाधि दिलाई।

सूर्या की कहानी बताती है कि प्रतिभा को जब अवसर मिलता है, तो वह सीमाओं को पार कर इतिहास रच देती है।

### अंतर्राष्ट्रीय सफर पहली गेंद पर छक्का

मार्च 2021 में इंग्लैंड के खिलाफ टी20 अंतर्राष्ट्रीय खेल में पदार्पण करते हुए सूर्यकुमार ने अपनी पहली ही गेंद पर छक्का जड़कर इतिहास रच दिया। यह आत्मविश्वास आगे चलकर उनकी पहचान बन गई। 2022 में इंग्लैंड के खिलाफ ट्रेंट ब्रिज में 117 रनों की तूफानी पारी ने उन्हें विश्व मंच पर स्थापित कर दिया। उसी वर्ष वे आईसीसी टी20 बल्लेबाज रैंकिंग में नंबर-1 बने और लगातार 2022 तथा 2023 में 'आईसीसी मेंस टी20 क्रिकेटर ऑफ द ईयर' चुने गए।

# बांग्लादेश में बीएनपी की आंधी

जन जन विचार
...✍ ढाका

बांग्लादेश की राजनीति में ऐतिहासिक बदलाव के साथ मंगलवार शाम तारिक रहमान ने देश के नए प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली। राष्ट्रपति मोहम्मद शहाबुद्दीन ने संसद भवन में उन्हें पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। 17 वर्षों के लंबे राजनीतिक निर्वासन के बाद यह तारिक रहमान का सत्ता में पहला प्रवेश है।

वे पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया और पूर्व राष्ट्रपति जियाउर रहमान के पुत्र हैं। दो महीने पहले ही लंदन से स्वदेश लौटे तारिक को दोपहर में सत्तारूढ़ दल ने संसदीय दल का नेता चुना था।

## तारिक रहमान बने प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री के साथ 25 कैबिनेट मंत्री और 24 राज्य मंत्रियों ने भी शपथ ली। मंत्रिमंडल में एक हिंदू मंत्री निताई रॉय चौधरी और एक बौद्ध मंत्री दिपेन देवान चकमा को शामिल कर अल्पसंख्यकों को प्रतिनिधित्व देने का संकेत दिया गया है।

कैबिनेट के 17 चेहरे नए हैं, जबकि सभी 24 राज्य मंत्री पहली बार मंत्री बने हैं। इसे 'नई पीढ़ी और नई सोच' की सरकार बताया जा रहा है।

**तारिक पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया और पूर्व राष्ट्रपति जियाउर रहमान के पुत्र हैं।**

शपथ ग्रहण समारोह में भारत की ओर से लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला उपस्थित रहे। उन्होंने नई सरकार को शुभकामनाएं दीं और प्रधानमंत्री तारिक रहमान को भारत आने का निमंत्रण दिया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी बधाई संदेश भेजते हुए द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करने की आशा जताई। दोनों देशों ने व्यापार, कनेक्टिविटी, सुरक्षा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ाने पर सहमति जताई है।

हालिया आम चुनाव में बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) ने 299 में से 209 सीटें जीतकर स्पष्ट बहुमत हासिल किया। सहयोगी दलों की 3 सीटों के साथ सरकार का आंकड़ा 212 तक पहुंच गया।

# भारत-बांग्लादेश रिश्ते : मरहम लगेगा या बढ़ेगी दूरी

जन जन विचार
...✍ ढाका/नई दिल्ली

भारत के पड़ोसी देश में नई पार्टी, नया चेहरा सत्ता पर काबिज हो चुका है। 2026 के आम चुनावों में तारिक रहमान की अगुवाई में बांग्लादेश नैशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) की प्रचंड जीत, संसद में जमात-ए-इस्लामी की अब तक की सबसे मजबूत मौजूदगी और पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना का भारत में रहना- इन तीनों फैक्टर ने दक्षिण एशिया की कूटनीति का संतुलन बदलकर रख दिया है।

बीएनपी के नेता तारिक रहमान की अगुवाई में बनी नई सरकार और नई दिल्ली के बीच रिश्ते अब एक संवेदनशील मोड़ पर गए हैं। यहां शेख हसीना प्रत्यर्पण, बॉर्डर सुरक्षा, जल-विवाद, व्यापार के साथ ही चीन-पाकिस्तान कारक जैसे मुद्दे समानांतर दबाव बना रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रहमान को बधाई संदेश भेजकर लोकतांत्रिक और समावेशी बांग्लादेश के लिए भारत के समर्थन का आश्वासन दिया है। लोकसभा स्पीकर ओम बिरला और विदेश सचिव विक्रम मिस्त्री वहां पहुंच भी गए, लेकिन जमीनी हकीकत में कई कठिन सवाल अभी भी सुलझे नहीं हैं।

हालिया चुनाव और नेतृत्व परिवर्तन के बाद नए समीकरण, सुलझ ना सकीं चुनौतियां, बदली कूटनीति के बीच क्या भारत और बांग्लादेश के रिश्ते पटरी पर लौट सकते हैं, आज यह यक्ष प्रश्न बना हुआ है।

## रिश्तों की चुनौतियां

### शेख हसीना का प्रत्यर्पण

ढाका की विशेष ट्रिब्यूनल द्वारा सजा सुनाए जाने के बाद बीएनपी सरकार ने शेख हसीना के प्रत्यर्पण की मांग तेज कर दी है। भारत के सामने गंभीर दुविधा खड़ी हो गई है। यदि भारत प्रत्यर्पण करता है तो यह उसकी पुरानी सहयोगी से दूरी का संकेत होगा, जबकि इनकार करने की स्थिति में नई सरकार के साथ शुरुआती तनाव पैदा हो सकता है। यह मुद्दा आने वाले महीनों में द्विपक्षीय रिश्तों की दिशा तय करने वाला साबित हो सकता है।

### तीस्ता और गंगा समझौता

तीस्ता नदी के जल बंटवारे पर वर्षों से गतिरोध बना हुआ है। इसके साथ ही वर्ष 1996 की गंगा जल संधि दिसंबर 2026 में समाप्त होने जा रही है। नई बांग्लादेशी सरकार 'न्यायसंगत हिस्सेदारी' की मांग को प्राथमिकता दे रही है। ऐसे में विश्वास बहाली और राजनीतिक इच्छाशक्ति के बिना किसी ठोस समाधान तक पहुंचना कठिन होगा।

### 'चिकन नेक' की चिंता

भारत और बांग्लादेश के बीच 4,096 किलोमीटर लंबी सीमा रणनीतिक रूप से अत्यंत संवेदनशील है। सिलीगुड़ी कॉरिडोर, जिसे 'चिकन नेक' कहा जाता है, भारत के पूर्वोत्तर राज्यों को मुख्य भूमि से जोड़ने वाली जीवनरेखा है। वर्ष 2001-06 के दौरान उग्रवादी गतिविधियों का अनुभव आज भी भारत की सुरक्षा नीति को प्रभावित करता है। यदि सुरक्षा सहयोग कमजोर पड़ा तो इसका सीधा असर पूर्वोत्तर भारत पर पड़ेगा। वहीं सीमा पर गोलीबारी और नागरिक मौतों की घटनाएं बांग्लादेश में जनभावना को भड़का सकती हैं, जिससे आपसी विश्वास प्रभावित हो सकता है।

### हिंदुओं की सुरक्षा

बांग्लादेश में साल 2024 के बाद हिंदू और अन्य अल्पसंख्यक समुदायों पर हमलों की रिपोर्ट्स बढ़ी हैं। भारत के लिए यह केवल मानवीय मुद्दा ही नहीं, बल्कि क्षेत्रीय स्थिरता का संकेतक भी है। नई सरकार के लिए सामाजिक शांति बनाए रखना राजनीतिक और कूटनीतिक दोनों ही नजरिए से जरूरी साबित होगा। गौरतलब है कि बीते कुछ महीनों में बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदू समुदाय पर हमले की घटनाएं बढ़ी हैं। चुनावों के दौरान भी यह बड़े पैमाने पर देखने को मिला।

### चीन और पाकिस्तान का समीकरण

तारिक रहमान ने चीन को 'विकास में सहयोगी' बताया है। इस बयान से यह संदेश भी गया है कि उनकी सरकार इंफ्रास्ट्रक्चर और आर्थिक प्रॉजेक्ट्स के लिए चीन के साथ काम को आगे भी जारी रखेगी। चीन पहले से बांग्लादेश का बड़ा रक्षा आपूर्तिकर्ता और बुनियादी ढांचा निवेशक है। चीन की बढ़ती और प्रभावी भूमिका से बंगाल की खाड़ी में रणनीतिक संतुलन प्रभावित हो सकता है।

शेख हसीना के बाहर जाने के बाद बांग्लादेश में पाकिस्तानी दखल बढ़ा है। साल 2026 की शुरुआत में चटगांव-कराची समुद्री संपर्क और रक्षा मुद्दों पर बातचीत ने पाकिस्तान के फिर से सक्रिय होने के संकेत दिए हैं। यहां जमात-ए-इस्लामी के प्रभावी होने को भी पाकिस्तान की इनडायरेक्ट एंट्री के तौर पर देखा जा रहा है।

*भारत की रणनीति बहु-आयामी जुड़ाव बनाए रखने की है ताकि पार्टनरशिप का विविधीकरण भारत के हितों के विपरीत ना जाए। भारत-बांग्लादेश संबंध इस समय एक 'रीसेट मोमेंट' में हैं। एक तरफ जहां ऐतिहासिक अविश्वास और राजनीतिक दबाव है, तो वहीं दूसरी तरफ आर्थिक, भौगोलिक और रणनीतिक परस्पर निर्भरता भी उतनी ही मजबूत है। आने वाले महीनों में यह स्पष्ट हो जाएगा कि क्या दोनों देश मतभेदों को संस्थागत संवाद के जरिए सुलझाकर सहयोग का नया अध्याय लिखते हैं या फिर प्रत्यर्पण और सुरक्षा जैसे मुद्दे रिश्तों पर अपना असर डालेंगे।*

# सोशल मीडिया : पढ़ाई में बाधा या भविष्य का अवसर

जन जन विचार
...✍ रामेश्वर शर्मा

आज के डिजिटल दौर में सोशल मीडिया को लेकर घर-घर में बहस छिड़ी हुई है। एक ओर जहां अभिभावक इसे पढ़ाई में बाधा और समय की बर्बादी मानते हैं, वहीं दूसरी ओर युवा इसे सीखने, नेटवर्किंग और करियर निर्माण का एक सशक्त माध्यम बताते हैं। आज की डिजिटल दौर में स्कूल और कॉलेज के छात्रों की दिनचर्या में सोशल मीडिया अहम हिस्सा बन चुका है। आजकल के बच्चे और यूथ इंस्टाग्राम, यूट्यूब और व्हाट्सऐप जैसे प्लेटफॉर्म पर काफी ज्यादा सक्रिय हैं। कई मामलों में वे इसका काफी सही और सटीक उपयोग कर रहे हैं, वहीं कूछ ऐसे

बच्चे भी हैं, जिनका ध्यान भटक रहा है।

इस बारे में अभिभावकों का कहना है कि सोशल मीडिया बच्चों का ध्यान पढ़ाई से हटा रहा है। बच्चे पूरा दिन रील्स और शॉर्ट वीडियो की दुनिया में खोए रहते हैं, जो उनके भविष्य के लिए ठीक नहीं है। वहीं दूसरी तरफ युवा सोशल मीडिया को अवसरों की दुनिया मानते हैं। उनके मुताबिक आने वाला समय आधुनिकता का है, ऐसे में समय के साथ अपडेट रहना बहुत जरूरी है। हालांकि कई बच्चे इसका इस्तेमाल पॉजिटिव तरीके से करते हैं, जैसे कंटेंट क्रिएशन, वीडियो एडिटिंग, ग्राफिक डिजाइनिंग और डिजिटल मार्केटिंग जैसी स्किल्स सीखकर फ्रीलांसिंग या पार्ट-टाइम इनकम भी कमा रहे हैं। वहीं जिन बच्चों का ध्यान काफी जल्दी भटक जाता है, उनके लिए यह घातक साबित हो रहा है।

सोशल मीडिया न पूरी तरह दुश्मन है, न ही पूरी तरह दोस्त। यह एक ऐसा उपकरण है, जिसका प्रभाव उसके उपयोग पर निर्भर करता है। संतुलन, जागरूकता और सही दिशा के साथ सोशल मीडिया नई पीढ़ी के लिए अवसरों का पुल बन सकता है, अन्यथा यह पढ़ाई और मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर भी डाल सकता है। हमें तकनीक का नियंत्रन के साथ उपयोग करना है, न कि तकनीक हमें नियंत्रित करे, इसका ध्यान रखना है। स्कूल में काफी पेरेंट्स अपने बच्चों के फोन एडिक्शन को लेकर शिकायत करने आते हैं।

# अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए आवेदन आमंत्रित

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

असम सरकार के उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय, खानापाड़ा, गुवाहाटी द्वारा शिक्षित बेरोजगार युवाओं (पुरुष एवं महिला) के लिए अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम हेतु आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम एचएमएनईएच योजना के अंतर्गत आयोजित किया जा रहा है।

निदेशालय द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार निम्नलिखित विषयों में प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा—

**नर्सरी प्रबंधन प्रशिक्षण :** युवा प्रतिभागियों को छोटे नर्सरी स्थापना एवं प्रबंधन का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाएगा। **स्थान :** सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (CoE), खेत्री, कामरूप (मेट्रो)

**प्राथमिक प्रसंस्करण प्रशिक्षण :** फल एवं सब्जियों के संरक्षण, जैम, जेली, अचार, स्क्वैश आदि के निर्माण की विधि सिखाई जाएगी। **स्थान :** प्रदर्शन अधिकारी कार्यालय, जुरिपार परिसर, पांजाबाड़ी, गुवाहाटी-37

**मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण :** मशरूम स्पॉन उत्पादन एवं आधुनिक तकनीकों की जानकारी दी जाएगी। **स्थान :** मशरूम स्पॉन उत्पादन इकाई, उद्यानिकी ग्रोथ सेंटर, खानापाड़ा, गुवाहाटी-22

**बेकरी एवं कन्फेक्शनरी प्रशिक्षण:** बेकरी उत्पादों एवं कन्फेक्शनरी निर्माण का व्यावहारिक प्रशिक्षण। **स्थान :** बेकरी यूनिट, उद्यानिकी ग्रोथ सेंटर, खानापाड़ा, गुवाहाटी-22

निदेशालय के अनुसार इच्छुक अभ्यर्थी साधारण कागज पर आवेदन पत्र में संबंधित प्रशिक्षण विषय का उल्लेख करते हुए पूर्ण बायोडाटा एवं मोबाइल नंबर सहित सीधे या संबंधित जिला कृषि अधिकारी के माध्यम से आवेदन भेज सकते हैं। आवेदन 31 मार्च, 2026 तक निदेशालय कार्यालय में हाथों-हाथ या ईमेल के माध्यम से पहुंचना अनिवार्य है।

**न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता:** एच.एस.एल.सी.

**प्रशिक्षण अवधि :** 3 दिन

प्रशिक्षण हेतु कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। प्रशिक्षण सामग्री, भोजन एवं आवास की व्यवस्था निदेशालय द्वारा की जाएगी, हालांकि यात्रा भत्ता प्रदान नहीं किया जाएगा।

इच्छुक उम्मीदवार अधिक जानकारी के लिए निदेशालय के ईमेल पर संपर्क कर सकते हैं।

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदेश के शिक्षित बेरोजगार युवाओं के लिए स्वरोजगार की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल माना जा रहा है।

## प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी/सामान्य ज्ञान प्रश्नावली

**भारतीय इतिहास**

1. 1857 के विद्रोह के दौरान कानपुर में विद्रोह का नेतृत्व किसने किया था?
2. 'गदर पार्टी' की स्थापना किस वर्ष और किस देश में हुई थी?
3. चंद्रगुप्त मौर्य के गुरु कौन थे?
4. पानीपत का तीसरा युद्ध किन दो शक्तियों के बीच हुआ था?
5. 'डायरेक्ट एक्शन डे' किस वर्ष घोषित किया गया था?

**भारतीय संविधान एवं राजनीति**

6. भारतीय संविधान की प्रस्तावना में 'समाजवादी' और 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द किस संशोधन द्वारा जोड़े गए?
7. लोकसभा की अधिकतम सदस्य संख्या कितनी हो सकती है?
8. वित्त आयोग का गठन भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद के तहत होता है?
9. भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) की नियुक्ति कौन करता है?
10. पंचायतों को संवैधानिक दर्जा किस संशोधन से मिला?

**भूगोल**

11. विश्व की सबसे लंबी नदी कौन-सी मानी जाती है?
12. भारत का सबसे बड़ा प्राकृतिक बंदरगाह कौन-सा है?
13. कर्क रेखा भारत के कितने राज्यों से होकर गुजरती है?
14. 'एल नीनो' किस महासागर से संबंधित जलवायु घटना है?
15. दक्कन का पठार मुख्यत: किस प्रकार की चट्टानों से बना है?

**विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी**

16. मानव शरीर में इंसुलिन का स्राव किस ग्रंथि से होता है?
17. 'ब्लैक होल' का सिद्धांत किस वैज्ञानिक से जुड़ा है?
18. डीएनए की संरचना की खोज किसने की?
19. भारत का पहला स्वदेशी उपग्रह कौन-सा था?
20. 'CRISPR' तकनीक किस क्षेत्र से संबंधित है?

**खेल**

21. टी20 अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में 100 मैच खेलने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी कौन हैं?
22. ओलंपिक में भारत ने पहला स्वर्ण पदक किस खेल में जीता था?
23. विम्बलडन टेनिस प्रतियोगिता किस देश में आयोजित होती है?
24. फीफा विश्व कप 2022 का विजेता देश कौन-सा था?
25. एशियाई खेलों का आयोजन कितने वर्षों के अंतराल पर होता है?

**अर्थव्यवस्था**

26. 'मुद्रास्फीति' का अर्थ क्या है?
27. भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना किस वर्ष हुई?
28. 'राजकोषीय घाटा' क्या दर्शाता है?
29. जीएसटी किस वर्ष भारत में लागू हुआ?
30. 'स्टार्टअप इंडिया' योजना की शुरुआत किस वर्ष हुई?

**उत्तर**

**1. नाना साहेब, 2. 1913 ई., अमेरिका (सैन फ्रांसिस्को), 3. चाणक्य (कौटिल्य), 4. मराठा साम्राज्य बनाम अहमद शाह अब्दाली (1761), 5. 16 अगस्त 1946, 6. 42वां संविधान संशोधन (1976). 7. 552, 8. अनुच्छेद 280, 9. भारत के राष्ट्रपति द्वारा, 10. 73वां संविधान संशोधन (1992), 11. नील नदी, 12. मुंबई बंदरगाह, 13. 8 राज्यों से, 14. प्रशांत महासागर, 15. ज्वालामुखीय (बेसाल्ट) चट्टानों से बना है, 16. अग्न्याशय से, 17. स्टीफन हॉकिंग, 18. जेम्स वाटसन और फ्रांसिस क्रिक, 19. आर्यभट्ट (1975), 20. जीन संपादन (Gene Editing) से संबंधित, 21. रोहित शर्मा, 22. हॉकी (1928, एम्स्टर्डम), 23. इंग्लैंड में. 24. अर्जेंटीना, 25. प्रत्येक 4 वर्ष में, 26. मुद्रास्फीति - वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमतों में सामान्य वृद्धि, 27. 1935. 28. राजकोषीय घाटा - सरकार के कुल व्यय और कुल आय (उधार को छोड़कर) का अंतर, 29. 1 जुलाई 2017, 30. 2016**

# 'महामुकाबला' या सिर्फ मार्केटिंग

जन जन विचार
...✍ स्पोर्ट्स डेस्क

हर बार की तरह इस बार भी भारत-पाकिस्तान मुकाबले को 'क्रिकेट की सबसे बड़ी जंग' बताकर परोसा गया। टीवी चैनलों पर 48 घंटे का काउंटडाउन, सोशल मीडिया पर युद्ध जैसे हैशटैग, विज्ञापनों में सैनिक भाषा-मानो क्रिकेट नहीं, सीमाओं पर टकराव होने वाला हो।

लेकिन टी-20 वर्ल्ड कप 2026 के इस मैच ने एक बार फिर सवाल खड़ा कर दिया है-क्या यह सच में 'महान प्रतिद्वंद्विता' है, या सिर्फ एक महंगा और भावनात्मक रूप से पैक किया गया प्रोडक्ट?

## क्रिकेट या कॉरपोरेट प्रोजेक्ट?

भारत-पाक मैच सिर्फ खेल नहीं, एक ब्रांड बन चुका है।
विज्ञापन कंपनियों के लिए
**सोने की खान**
चैनलों के लिए
**टीआरपी का विस्फोट**
सोशल मीडिया के लिए
**राष्ट्रवादी ट्रेंड**

राइवलरी को जिंदा रखने के लिए डर और दुश्मनी का इस्तेमाल किया जाता है। पुरानी राजनीतिक कटुता को उछालकर क्रिकेट को भावनात्मक युद्ध बना दिया जाता है। सवाल यह है, क्या दर्शक क्रिकेट देखने आते हैं या राष्ट्रवादी स्क्रिप्ट का हिस्सा बनने?

भारत और पाकिस्तान के रिश्ते पहले ही संवेदनशील हैं। ऐसे में क्रिकेट को 'बदले की जंग', 'महायुद्ध', 'सीमा पार का मुकाबला' कहकर प्रचारित करना गैर-जिम्मेदाराना है। खेल और राजनीति का संबंध हो सकता है, लेकिन खेल को युद्ध में बदल देना खतरनाक है।

जब विज्ञापन सैनिक पृष्ठभूमि और युद्ध के संकेतों से भरे हों, तो यह खेल की आत्मा पर हमला है।

## भारत-पाक मैच पर उठ रहा सवाल

## हाइप का पहाड़ मुकाबले की रेत

कहा गया कि यह मैच अकेले सैकड़ों मिलियन डॉलर का कारोबार खड़ा कर देता है। ब्रॉडकास्ट राइट्स, डिजिटल व्यूअरशिप, स्पॉन्सरशिप-सबका केंद्र यही एक मुकाबला।

लेकिन मैदान पर क्या हुआ?

ईशान किशन की 40 गेंदों पर 77 रन की आक्रामक पारी ने भारत को 175/7 तक पहुंचाया। जवाब में पाकिस्तान की बल्लेबाजी दबाव में बिखर गई और भारत ने 61 रन से जीत दर्ज कर ली।

कहां था वो आखिरी ओवर का रोमांच, जो 'महान' शब्द को सार्थक करता है? अगर मुकाबला ही एकतरफा हो, तो इसे इतिहास की सबसे बड़ी राइवलरी कहना सिर्फ प्रचार का हिस्सा लगता है।

## भारत से रिश्ते सुधारने की कोशिश में बांग्लादेश

**ढाका।** टी-20 वर्ल्ड कप में भाग नहीं लेने के फैसले के बाद पैदा हुई कूटनीतिक तल्खी के बीच बांग्लादेश की नई सरकार ने भारत से रिश्ते सुधारने के संकेत दिए हैं। नव नियुक्त युवा एवं खेल राज्य मंत्री अमीनुल हक ने स्पष्ट कहा है कि ढाका भारत के साथ सभी मुद्दों को बातचीत के जरिए सुलझाना चाहता है और पड़ोसी देशों के साथ मित्रतापूर्ण संबंध बनाए रखना सरकार की प्राथमिकता है।

यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार ने सुरक्षा कारणों का हवाला देते हुए राष्ट्रीय टीम को चल रहे टी-20 वर्ल्ड कप में नहीं भेजने का फैसला किया था। इसके बाद टूर्नामेंट में बांग्लादेश की जगह स्कॉटलैंड को शामिल किया गया।

शपथ ग्रहण के बाद अमीनुल हक ने संसद भवन में भारत के उप उच्चायुक्त से मुलाकात की। उन्होंने कहा, 'हम इस मुद्दे को बातचीत के जरिए जल्दी सुलझाना चाहते हैं, क्योंकि हम सभी पड़ोसी देशों के साथ दोस्ताना संबंध बनाए रखना चाहते हैं। खेल से लेकर हर क्षेत्र में ईमानदार और सौहार्दपूर्ण रिश्ता बनाना हमारी प्राथमिकता है।' उन्होंने स्वीकार किया कि 'राजनयिक जटिलताओं' के कारण बांग्लादेश वर्ल्ड कप में हिस्सा नहीं ले सका।

# अब 'उलटफेर' नहीं, बराबरी की दस्तक

जन जन विचार
...✍ स्पोर्ट्स डेस्क

टी20 विश्व कप 2026 में भले ही बड़े उलटफेर कम देखने को मिले हों, लेकिन एक बदलाव साफ दिखाई दिया-एसोसिएट टीमें अब सिर्फ संख्या पूरी करने नहीं आतीं, वे मुकाबला जीतने का माद्दा लेकर उतरती हैं। कई मैचों में उन्होंने स्थापित ताकतों को आखिरी ओवर तक पसीना बहाने पर मजबूर किया। फासला अब घट रहा है।

भारत 63/4 पर था, पाकिस्तान 125/7 पर दबाव में, नेपाल 171/5 पर इतिहास के करीब-ऐसे कई क्षण आए जब मैच का रुख किसी भी ओर मुड़ सकता था। इटली को जीत के लिए कुछ ही गेंदों में बड़े शॉट चाहिए थे और ग्रांट स्टीवर्ट क्रीज पर थे। स्टेडियम की सांसें थमी थीं। भले ही नतीजे अंततः पारंपरिक दिग्गजों के पक्ष में गए, लेकिन यह साफ हो गया कि एसोसिएट टीमें अब बराबरी की टक्कर दे रही हैं।

इंग्लैंड के ऑलराउंडर सैम कुरैन ने भी स्वीकार किया कि एसोसिएट देशों को अधिक अवसर मिल रहे हैं और वे तेजी से बेहतर हो रहे हैं। नेपाल का प्रदर्शन इसका उदाहरण रहा-वे इंग्लैंड को हराने के बेहद करीब पहुंचे।

आधुनिक क्रिकेट में टी20 लीगों का विस्तार एसोसिएट खिलाड़ियों के लिए वरदान साबित हुआ है।

नेपाल के स्टार दिपेंद्र सिंह आइरी अब बड़े मंचों पर खेल रहे हैं। नामीबिया से जुड़े एंड्रिस गोनस ने टी20 लीग में यादगार शतक जड़ा। नीदरलैंड्स के पॉल वाव मीक्रेन कई देशों की लीगों में अनुभव बटोर चुके हैं।

लगातार उच्च स्तरीय क्रिकेट, दबाव भरे मैच और पेशेवर माहौल-इन सबने एसोसिएट खिलाड़ियों को मानसिक और तकनीकी रूप से मजबूत किया है। विश्व स्तरीय अनुभव अब एसोसिएट ड्रेसिंग रूम तक पहुंच चुका है। यही कारण है कि मैदान पर आत्मविश्वास झलकता है।

इटली की ऐतिहासिक जीत और नेपाल-स्कॉटलैंड जैसे मुकाबलों ने यह दिखा दिया कि क्रिकेट अब कुछ देशों तक सीमित नहीं। जिन टीमों को कभी 'अंडरडॉग' कहा जाता था, वे अब खेल की कहानी बदल रही हैं।

हो सकता है अगली बार अमेरिका भारत को हराए, या नीदरलैंड्स पाकिस्तान को। तब शायद हम उसे 'उलटफेर' नहीं कहेंगे। बस कहेंगे-यह प्रतिस्पर्धा है।

Scholar's Global School
SCHOLAR'S GLOBAL SCHOOL
ADMISSION GOING ON FOR
ACADEMIC SESSION 2026 - 27
CLASS - NURSERY TO - NINE
HSLC result: 100 % pass
Limited Seats Reserve Your Seat Today
WHY CHOOSE SCHOLAR'S GLOBAL SCHOOL
Experienced and Dedicated Teachers
Safe and Friendly Learning Environment
Karate Classes for Discipline & Fitness
Remedial Classes For Academic Support
Focus on Overall Development
NEP Ready School
94355 92931
AS PER SECTION 12.1.C OF RTE ACT 2009, 25% SEATS ARE RESEVED FOR CHILDREN FROM DISADVANTAGED SECTION OF SOCIETY.
A.K.DEV ROAD, KATAHBARI (NEAR 5 NO. MASJID) GHY-35

# रमजान : इबादत, इंसानियत और आत्मसंयम का महीना

जब आसमान में चांद की पतली सी किरण दिखाई देती है, तो दुनिया भर के मुसलमानों के दिलों में एक नई रोशनी जगमगा उठती है। यही वह क्षण होता है, जब पवित्र महीना रमजान शुरू होता है-इबादत, सब्र और इंसानियत का महीना।

रमजान इस्लामी कैलेंडर का नौवां महीना है। माना जाता है कि इसी महीने में पवित्र ग्रंथ कुरान का अवतरण हुआ। इस महीने में रोजा रखना हर सक्षम मुस्लिम पर फर्ज है। सूर्योदय से सूर्यास्त तक भोजन और पानी से परहेज केवल भूख-प्यास सहने का अभ्यास नहीं, बल्कि आत्मसंयम और आत्मशुद्धि की साधना है।

सुबह की शुरुआत सेहरी से होती है और दिनभर के संयम के बाद शाम को इफ्तार में खजूर और पानी से रोजा खोला जाता है। मस्जिदों में तरावीह की नमाज अदा की जाती है, जहां कुरान की तिलावत की जाती है। यह माहौल केवल धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं रहता, बल्कि समाज में भाईचारे और करुणा की भावना को भी मजबूत करता है।

रमजान का एक महत्वपूर्ण पक्ष है जकात और सदका-जरूरतमंदों की मदद करना। यह महीना हमें सिखाता है कि समाज के कमजोर वर्गों के प्रति हमारी जिम्मेदारी क्या है। जब कोई रोजेदार भूख महसूस करता है, तो उसे गरीबों की पीड़ा का अहसास होता है और दिल में हमदर्दी पैदा होती है।

रमजान का समापन 'ईद अल फितर' के साथ होता है, जिसे खुशी और कृतज्ञता के त्योहार के रूप में मनाया जाता है। नए कपड़े, मीठी सेवइयां और गले मिलकर बधाइयां देना-ये सब उस आत्मिक यात्रा की पूर्णता का प्रतीक हैं, जो एक महीने तक चली।

आज के भागदौड़ भरे जीवन में रमजान हमें ठहरकर आत्ममंथन करने का अवसर देता है। यह केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि इंसानियत, समानता और अनुशासन का संदेश है।

धर्म चाहे कोई भी हो, आत्मसंयम, करुणा और भाईचारा ही सच्चे समाज की नींव हैं।

## जकात : इंसानियत और बराबरी का संदेश

जकात इस्लाम के पांच स्तंभों में से एक है। यह केवल दान नहीं, बल्कि एक धार्मिक कर्त्तव्य (फर्ज) है, जिसके माध्यम से संपन्न व्यक्ति अपनी आय का एक निश्चित हिस्सा जरूरतमंदों को देता है।

**जकात किन्हें दी जाती है?**
गरीब और जरूरतमंद, अनाथ, विधवा, कर्ज में डूबे लोग, मुसाफिर

जकात का उल्लेख पवित्र ग्रंथ कुरान में कई स्थानों पर मिलता है। इसका उद्देश्य समाज में आर्थिक संतुलन स्थापित करना और गरीबों की सहायता करना है।

सामान्यत: कुल बचत और संपत्ति का 2.5 प्रतिशत जकात के रूप में दिया जाता है।

यह तब लागू होता है जब व्यक्ति की संपत्ति निसाब (निर्धारित न्यूनतम सीमा) से अधिक हो और एक वर्ष पूरा हो चुका हो।

जकात समाज में करुणा, समानता और भाईचारे की भावना को बढ़ाती है। यह अमीर और गरीब के बीच की दूरी कम करने का माध्यम है। रमजान के महीने में लोग विशेष रूप से जकात अदा करते हैं, ताकि अधिक से अधिक जरूरतमंदों तक सहायता पहुंच सके।

## सदका : नेकी का स्वैच्छिक रूप

सदका इस्लाम में स्वेच्छा से किया गया दान या भलाई का कार्य है। यह अनिवार्य नहीं होता, बल्कि दिल से की गई मदद है-चाहे वह धन से हो, समय से हो या व्यवहार से।

सदका का उल्लेख पवित्र ग्रंथ कुरान और हदीसों में मिलता है। इसमें बताया गया है कि मुस्कान देना, किसी की मदद करना या रास्ते से कांटा हटाना भी सदका है।

सदका समाज में दया, प्रेम और सहयोग की भावना को मजबूत करता है। यह व्यक्ति के दिल को साफ करता है और

**सदका के रूप**
भूखे को भोजन कराना
प्यासे को पानी देना
गरीब की आर्थिक सहायता
शिक्षा या इलाज में मदद
किसी को सांत्वना या हौसला देना

समाज में सकारात्मक ऊर्जा फैलाता है। सदका केवल धन का दान नहीं, बल्कि नेक इरादों और अच्छे कर्मों का नाम है। यह सिखाता है कि छोटी-सी भलाई भी किसी के जीवन में बड़ी खुशी ला सकती है।

# हिन्दू औरतें होंगी हमारी भारत बनेगा इस्लामी मुल्क

विपुल अमृतलाल शाह और उनके बैनर 'सनशाइन पिक्चर्स' की फिल्म 'द केरल स्टोरी 2- गोज बियॉन्ड' का दमदार ट्रेलर रिलीज हो गया है। यह फिल्म 27 फरवरी को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

2022 की फिल्म 'द केरल स्टोरी' का यह अगला पार्ट है। 3 मिनट 27 सेकेंड का यह ट्रेलर पहले पार्ट से ज्यादा गंभीर और दर्दनाक नजर आता है। इसमें तीन अलग-अलग राज्यों में धर्मांतरण से जुड़ी कहानियां दिखाई गई हैं।

फिल्म तीन हिंदू लड़कियों के धर्मांतरण और उनकी त्रासदी से जुड़ा हुआ है। ये लड़कियां हैं- उल्का गुप्ता, अदिति भाटिया और ऐश्वर्या ओझा। ये तीनों मुस्लिम लड़कों के प्रेम जाल में फंस जाती हैं। उन्हें विश्वास दिलाया जाता है कि ये लोग आम हिंदू लड़कों की तरह हैं। इसलिए अदिति भाटिया कहती है कि 'उसका सलीम दूसरों जैसा नहीं है।' धीरे-धीरे जब उन्हें अपने रिश्तों की सच्चाई समझ में आती है, तब तक काफी देर हो चुकी होती है। उनका जबरन धर्म परिवर्तन करा कर निकाह किया जाता है। साजिश के तहत धर्मांतरण कराने का एक सोचा-समझा एजेंडा सामने आता है। ट्रेलर की शुरुआत एक चेतावनी से होती है।

**'द केरल स्टोरी 2' का ट्रेलर**

इसमें कहा गया है कि अगले 25 सालों में इस्लामिक स्टेट बन सकता है भारत। ट्रेलर में ये भी कहा गया है कि हिंदू औरतें हमारी होंगी और इस्लामी मुल्क बन जाएगा। तीन कहानियां फिर शुरू होती है। पहला राजस्थान के हिंदू परिवार की है जो पॉक्सो के तहत शिकायत तर्ज कराने थाने पहुंचता है। उसकी बेटी 16 साल की है जिसका धर्मांतरण करा दिया गया है। वह पुलिस स्टेशन बुर्के में पहुंचती है। इस दौरान एक बेबस बाप उसके शौहर का कॉलर पकड़ कर कहता है कि उसने नाबालिग बच्ची को फंसा कर अच्छा नहीं किया। यहां एक परिवार की लाचारी को बखूबी दिखाया गया है। इसके बाद दूसरी स्टोरी मध्य प्रदेश की है, जहां हिंदू युवती को एक मुस्लिम युवक अपने प्रेम जाल में फंसा कर उससे धर्म परिवर्तन का दबाव बनाता है। उसके साथ धोखा हुआ है। उस दर्द और अकेलापन और डर भरे माहौल में वह कैसे घुट रही है, ये ट्रेलर में दिखाया गया है। तीसरी स्टोरी केरल के हिंदू लड़की की है, जिसे पता होता है कि उसका बॉयफ्रेंड मुस्लिम है। वह उसे साफ बताती है कि वह धर्म नहीं बदलेगी। आगे ट्रेलर में दिखाया गया है कि उस पर कैसे धर्म परिवर्तन का दबाव डाला जाता है। उसे बीफ खाने के लिए मजबूर किया जाता है। उसकी आस्था, आजादी और विश्वास को तार-तार कर दिया जाता है। ट्रेलर में मुस्लिम लड़का यह कह रहा है कि उसे एक ब्राह्मण लड़की को फंसाना है, जिसके पैसे ज्यादा मिलेंगे।

## खाना-खजाना

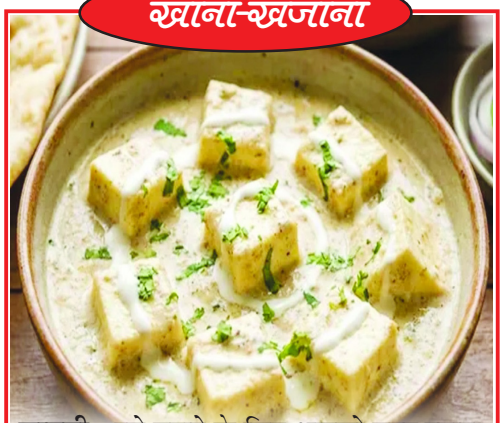

**सामग्री :** इसे बनाने के लिए आपको बहुत ज्यादा तामझाम की जरूरत नहीं है। बस 250 ग्राम ताजा पनीर, आधा कप ताजी मलाई, थोड़े से काजू का पेस्ट, अदरक-लहसुन का पेस्ट और कुछ बेसिक खड़े मसाले जैसे- तेजपत्ता, इलायची और दालचीनी। अगर आप इसे और भी शाही बनाना चाहते हैं, तो इसमें थोड़ा सा केसर वाला दूध भी डाल सकते हैं।

**बनाने का तरीका :** एक कड़ाही में थोड़ा मक्खन या घी गरम करें और उसमें खड़े मसाले डालें। अब अदरक-लहसुन का पेस्ट और बारीक पिसा हुआ प्याज भूनें। याद रहे, प्याज को लाल नहीं करना है, बस हल्का गुलाबी होने तक भूनना है ताकि ग्रेवी का रंग सफेद या हल्का पीला बना रहे। इसमें काजू का पेस्ट और मलाई डालकर धीमी आंच पर पकाएं। जब ग्रेवी तेल छोड़ने लगे, तब इसमें पनीर के क्यूब्स डाल दें।

पूर्वांचल प्रिंट्स की ओर से राजनाथ पाल द्वारा जीएमसीएच रोड, हरबाला मार्केट, भांगागढ़, गुवाहाटी-781005 से प्रकाशित एवं मुद्रित। संपर्क : 69001 26012
ई-मेल:official.janjanvichar@gmail.com, वेबसाइट: www.janjanvichar.in ●संपादक : धनेश्वर चौधरी